रजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626

आईएसएसएन नंबर : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

प्रधान संपादक : ए. के. प्रसाद

www.prantiindia.com

+91 9453535495 | editor@prantiindia.com

वर्ष 01, अंक 04, पेज 53, मूल्य ₹150

मासिक साहित्यिक पत्रिका

अक्टूबर 2024, बगौरा (बिहार) से प्रकाशित

इस अंक में

हमारे बारे में 03
संपादन मंडल 04
प्रबंधन विभाग 05
समन्वयन समिति 06
सलाह केंद्र 07
अभिकल्पन प्रकोष्ठ 08
हमारे संपादक 09
संपादकीय 10
आपके पत्र 12
चित्रकारी 13
साक्षात्कार 14

पद्य रचनाएं

दो अनमोल रत्न/पूनम लता 15
लाल बहादुर/डॉ सरला सिंह "स्निग्धा" तथा सीख/हरमिंदर कौर 16
हम सब की हिंदी/राजीव कुमार तथा वीर कुंवर सिंह/नीरज वर्मा 17
साबरमती के संत/सुनीता नायक एस एन तथा गांधीजी के सिद्धांत/विरेन्द्र जैन 18
पुण्य धरा/ज्योति चौपड़ा तथा बापू के नाम/सुशी सक्सेना 19
स्मृतियां/सपना अग्रवाल तथा मेरे भाग में/डॉ नीरज पखरोलवी 20
निर्वाण/प्रीतेश बुनकर “प्रीत” तथा जगमग - जगमग/नेहा चौरसिया 21
बंगाल दुर्घटना तथा प्रसाद घोटाला/देवेश साखरे 'देव'..22
भारत के शिल्पकार/अलीशा शेख तथा किससे कहूं/प्रेमचन्द ठाकुर 23
चाँद/मुकेश जोशी 'भारद्वाज' तथा माँ शैलपुत्री देवी/डॉ. राम कुमार झा "निकुंज"..24
मन की बात/अच्युत उमर्जी तथा गर्भवती सूअरी/इला कुमारी..25
कोई गाँधी बन पाता/विनोद प्रसाद तथा एक विश्वास/बद्री प्रसाद वर्मा अनजान 26
शब्दहीन चीख/अंजना गोमास्ता 27
युगों-युगों तक/सीमा चुघ 28
दिली तमन्ना/भोला शरण प्रसाद तथा ग़ज़ल/रवि ऋषि 29

गद्य रचनाएं

कहानी | पटाखे नहीं जलाऊंगा/बद्री प्रसाद वर्मा अनजान 30
लघुलेख | उठता हुआ विश्वास/जुगेन्द्र सिंह 'विद्यार्थी' 31
लेख | शास्त्री जी/अंकुर सिंह 32
लघुकथा | वह अकेली पहली रात/डॉ० हरिवंश शर्मा 34
यात्रा वृतांत | 'दुर्ग' भ्रमण/जुगेन्द्र सिंह 'विद्यार्थी' 35
कहानी | रॉकेट वाला/अर्चना त्यागी 36

लेख | हिंदी भाषा/शशि धर कुमार 38
कहानी | खुश रहने की ज़िद /प्राची तिवारी 'छबि' 40
कहानी | बेटियों की मां/प्रेमलता यदु 42
लेख | भारतीय नारी/डॉ मीना कुमारी परिहार 'मान्या' 44
लेख | असमानताओं का लेखा जोखा/प्रमोद झा 46
संस्मरण | स्मृतियों के निशान-चिन्ह/डॉ. लेखराज 49

हमारे बारे में

प्रान्ति इंडिया एक साहित्यिक संगठन है जो भारत में स्थित है। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नए और स्थापित लेखकों को प्रोत्साहित करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित करना है। प्रान्ति इंडिया की स्थापना साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में ए. के. प्रसाद द्वारा की गई थी, जो एक प्रकाशक और संपादक हैं। उन्होंने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करती है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। इस टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ। प्रान्ति इंडिया की मासिक साहित्यिक पत्रिका का उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। यह पत्रिका विभिन्न प्रकार की सामग्री प्रकाशित करती है, जैसे कि कविताएं, ग़ज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि। प्रान्ति इंडिया की पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकारों के विचार उनके निजी होते हैं और उनसे स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक का सहमत या असहमत होना जरूरी नहीं है। अगर कॉपीराइट का कोई मामला सामने आता है, तो केवल रचनाकार को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। प्रान्ति इंडिया का राजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626 तथा आईएसएसएन नंबर 9334-0970 है। इसका कार्यालय बगौरा, बिहार 841404 में स्थित है। प्रान्ति इंडिया के लिए यदि आपके पास कुछ सुझाव/शिकायत है तो विभागीय कार्रवाई के लिए निम्नांकित विभागों के eमेल पर अथवा मुख्य कार्यकारी अधिकारी को डाक द्वारा भी भेज सकते हैं।

संपादन मंडल : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ : designer@prantiindia.com

इसके अलावा, प्रान्ति इंडिया सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी सक्रिय है, जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि। आप प्रान्ति इंडिया को सोशल मीडिया पर फॉलो कर सकते हैं और साहित्यिक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

संपादन मंडल

प्रान्ति इंडिया के संपादकीय कार्यान्वयन के लिए संपादक ए. के. प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को संपादन मंडल का गठन किया गया।

संपादन मंडल के कार्य:

- सामग्री की समीक्षा और संपादन: संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के लिए प्रस्तुत की गई सामग्री की समीक्षा और संपादन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

- सामग्री की योजना और विकास: संपादन मंडल सामग्री की योजना और विकास के लिए जिम्मेदार है, जिसमें विषयों का चयन, लेखकों का चयन, और सामग्री के प्रारूप का निर्धारण शामिल है।

- सामग्री की प्रकाशन तैयारी: संपादन मंडल सामग्री की प्रकाशन तैयारी के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सामग्री का संपादन, प्रूफरीडिंग, और डिज़ाइन शामिल है।

- गुणवत्ता नियंत्रण: संपादन मंडल गुणवत्ता नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सुनिश्चित किया जाता है कि प्रकाशित सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

इन कार्यों के माध्यम से, संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालता है और साहित्यिक उत्कृष्टता की दिशा में काम करता है।

संपादन मंडल के सदस्य:

1. डॉ. लेखराज शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. डॉ. विनीत विद्यार्थी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. डॉ. अनिता जठार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. डॉ. गायत्री कोंपल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि किस स्तर की प्रकाशन सामग्री पुस्तक पत्रिका के लिए चयनित व प्रकाशित होगी।

हमारा eमेल है : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग

प्रान्ति इंडिया के दैनंदिन प्रबंधन के लिए प्रबंधक प्रदीप प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को प्रबंधन विभाग का गठन किया गया।

प्रबंधन विभाग के कार्य:

- दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्य समय पर और प्रभावी ढंग से पूरे हों।

- संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विभागों और टीमों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों।

- कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यक्रम समय पर और प्रभावी ढंग से आयोजित हों।

- नीतियों का निर्धारण और लागू करना: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया की नीतियों का निर्धारण और लागू करने के लिए जिम्मेदार है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में एकरूपता और संगठन हो।

- संचार और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के विभिन्न विभागों और टीमों के बीच संचार और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में तालमेल और संगठन हो।

इन कार्यों के माध्यम से, प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यों में अधिक संगठन और प्रभावी ढंग से संचालन सुनिश्चित करता है।

प्रबंधन विभाग के सदस्य:

1. श्री रामजी मल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अच्युत उमर्जी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री अरुण शुक्ला (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्रीमती नीरज वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती प्रेमलता यदु (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रबंधन कार्य को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए संसाधनों का समय पर इंतजाम हो।

हमारा eमेल है : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति

प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए समन्वयक फुलवन्ती देवी की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को समन्वयन समिति का गठन किया गया।

समन्वयन समिति के कार्य:

- गतिविधियों का समन्वयन करना: समन्वयन समिति सभी गतिविधियों का समन्वयन करती है, जैसे कि साहित्यिक कार्यक्रम, प्रकाशन व अन्य साहित्यिक आयोजन। यह सुनिश्चित करती है कि सभी गतिविधियां उद्देश्यों के अनुसार चल रही हैं और एक दूसरे के साथ समन्वयित हैं।

- टीम के बीच समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति टीम के सदस्यों के बीच समन्वय स्थापित करती है ताकि वे एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से काम कर सकें। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सदस्य एक दूसरे के काम से अवगत हैं और एक दूसरे की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं।

- सहयोगी के साथ समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति सहयोग करने वाले संगठनों और व्यक्तियों के साथ समन्वय स्थापित करती है ताकि हमें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सके। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सहयोगी संगठन व व्यक्ति उद्देश्यों के अनुसार काम कर रहे हैं।

- प्रगति की निगरानी करना: समन्वयन समिति प्रगति की निगरानी करती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम अपने उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ रहे है। यह सुनिश्चित करती है कि सारी गतिविधियां प्रभावी ढंग से चल रही हैं। हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति कर रहे हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, समन्वयन समिति प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों में समन्वयन को संभालता है और लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से काम करता है।

समन्वयन समिति के सदस्य:

1. सुश्री इला कुमारी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. सुश्री सोनल ओमर (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. सुश्री नेहा चौरसिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. सुश्री रितु झा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन में तालमेल को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि कब और किस तरह साहित्यिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए योजना बनाई जाए।

हमारा eमेल है : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र

प्रान्ति इंडिया के मार्गदर्शन के लिए सलाहकार प्रशान्त अमन की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को सलाह केंद्र का गठन किया गया।

सलाह केंद्र के कार्य:

- मार्गदर्शन प्रदान करना: सलाह केंद्र संगठनिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जिसमें संगठन की गतिविधियों और नीतियों को विकसित करने में मदद की जाएगी। यह मार्गदर्शन उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- समस्या समाधान संबंधी सलाह: सलाह केंद्र समस्याओं का समाधान करने में मदद करेगा, जो संगठन की प्रगति में मदद करेगा। यह समस्या समाधान संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- विकास संबंधी सलाह: सलाह केंद्र विकास में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह विकास संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- सुधार संबंधी सलाह: सलाह केंद्र संगठन में सुधार करने में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह सुधार संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

इन कार्यों के माध्यम से, सलाह केंद्र प्रान्ति इंडिया को मार्गदर्शन प्रदान करेगा और संगठन की प्रगति में मदद करेगा।

सलाह केंद्र के सदस्य:

1. श्री रवि शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री विनोद प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री भोला शरण प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री व्यग्र पाण्डेय (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती स्नेह गोस्वामी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि मार्गदर्शन और सलाह की सहायता से गतिविधियां सही दिशा में चल रही है।

हमारा eमेल है : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ

प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक संयोजन के लिए अभिकल्पक सौरभ कुमार की अध्यक्षता में 11 जुलाई 2024 को अभिकल्पन प्रकोष्ठ का गठन किया गया।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के कार्य:

- पुस्तक का कवर डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के कवर का डिजाइन बनाता है, जिसमें पुस्तक का शीर्षक, लेखक का नाम, और अन्य आवश्यक जानकारी शामिल होती है।

- पुस्तक के अंदर चित्र डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के अंदर चित्रों का डिजाइन बनाता है, जिसमें ग्राफिक्स, चित्र, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

- वेबसाइट डिजाइन और विकास: अभिकल्पन प्रकोष्ठ वेबसाइट का डिजाइन और विकास करता है, जिसमें वेबसाइट की संरचना, डिजाइन, और कार्यक्षमता शामिल है।

- सोशल मीडिया डिजाइन और प्रबंधन: अभिकल्पन प्रकोष्ठ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर सामग्री का डिजाइन और प्रबंधन करता है, जिसमें पोस्ट, ग्राफिक्स, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, अभिकल्पन प्रकोष्ठ प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक कार्यों को संभालता है और कौशल विकास की दिशा में काम करता है।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के सदस्य:

1. श्री शशि धर कुमार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अंकुर सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री रोहताश वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री आनंद सिसोदिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्री खुमन सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रकाशन सामग्री के डिजाइन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि डिजाइन सामग्री आकर्षक और प्रभावशाली हो।

हमारा ईमेल है : designer@prantiindia.com

हमारे संपादक

ये हैं ए. के. प्रसाद जिनका जन्म 10 जनवरी को बिहार के सीवान में स्थित बगौरा में वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिताजी श्री प्रदीप प्रसाद और पितामह श्री जगदीश प्रसाद व्यवसायी हैं। माताजी श्रीमती फुलवन्ती देवी गृहिणी हैं। इन्होंने शुरुआती शिक्षा गांव से प्राप्त करने के पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से अपनी पढाई पूरी की। इनकी बाल्यकाल से हिन्दी साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि का परिणाम सातवीं कक्षा में दिखने लगा। अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में चौकस संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कवि सम्मेलनों में जाकर कविता सुनाकर सभी को आनंदित कर वाह-वाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के सानिध्य व सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिवर्ष लगभग 8-10 नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श हुआ कि वर्तमान परिवेश में प्रकाशन व्यवसाय की व्यवस्था कितनी विस्तृत व महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने वाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुविधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नवांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर विश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकते है।

संपादकीय

नमस्कार प्रान्ति इंडिया परिवार के सभी सदस्यों और पाठकों को! अक्टूबर माह, एक ऐसा समय जब जीवन के रंगों का संगम होता है। इस माह में हम कई महत्वपूर्ण अवसरों का स्वागत करते हैं, जो हमें जीवन के सच्चे मूल्यों की याद दिलाते हैं और हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने जीवन में इन मूल्यों को अपनाएं। इस माह की शुरुआत में, हम महात्मा गांधी की जयंती मनाते हैं। गांधी जी के जीवन और दर्शन ने हमें अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनके विचार और आदर्श आज भी हमें प्रेरित करते हैं। हम उनके जीवन से प्रेरित कहानियों को याद करते हैं और उनके विचारों को अपने जीवन में लागू करने का संकल्प लेते हैं। इसके अलावा, इस माह में हम नवरात्रि का त्योहार भी मनाते हैं। नवरात्रि शक्ति और आध्यात्म की भावना को दर्शाता है। देवी दुर्गा की आराधना और पूजा से हमें शक्ति और साहस की प्राप्ति होती है। हम उनकी कृपा से अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में बढ़ाने की प्रेरणा लेते हैं। और फिर दीपावली का त्योहार, जो प्रकाश और ज्ञान की जीत का प्रतीक है। यह त्योहार हमें अच्छाई और बुराई के बीच के संघर्ष में अच्छाई की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। हम दीपावली के अवसर पर अपने जीवन को नई दिशा में बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। हमारी पत्रिका में इस माह के महत्वपूर्ण अवसरों के अलावा, साहित्यकारों की रचनाएं और लेख भी प्रकाशित किए गए हैं। हिंदी साहित्य की दुनिया में साहित्यकारों का योगदान अतुलनीय है। उनकी लेखनी से हमें नई दिशा मिलती है, नई सोच मिलती है, और हमारी संस्कृति को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में मदद मिलती है। लेकिन आजकल, साहित्यकारों को उनके योगदान के अनुसार सम्मान नहीं मिलता। इसी कारण से, मैं सोचता हूं कि साहित्य के क्षेत्र में अच्छा करने वाले साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाए। इस सम्मान से साहित्यकारों को न केवल उनके कार्य की मान्यता मिलेगी, बल्कि इससे वे और भी अधिक उत्साह से हिंदी साहित्य के लिए अपनी लेखनी जारी रख सकेंगे। साहित्यकारों को सम्मानित करने से हमारी संस्कृति और भाषा को भी मजबूती मिलेगी। लेकिन साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए केवल पैसों की जरूरत नहीं है। मजबूत इच्छा शक्ति और समर्थन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। किसी भी कार्य को करने के लिए पैसों से कई गुना बढ़कर मजबूत इच्छा शक्ति कार्य करती है। यदि हम साहित्यकारों को सच्चे दिल से समर्थन दें और उनके कार्य की मान्यता दें, तो वे और भी अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगे। आजकल, साहित्य के क्षेत्र में कई साहित्यकार अपनी लेखनी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें अपने कार्य के लिए समर्थन और मान्यता नहीं मिल पाती। इससे वे निराश हो जाते हैं और अपनी लेखनी बंद कर देते हैं। लेकिन यदि हम उन्हें समर्थन दें और उनके कार्य की मान्यता दें, तो वे और भी अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगे। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए, प्रान्ति इंडिया की पूरी टीम अगले वर्ष 10 जनवरी 2025 को वाराणसी में एक वार्षिकोत्सव समारोह के दौरान साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए तैयार है। इस समारोह में हम उन साहित्यकारों को सम्मानित करेंगे जिन्होंने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। जो साहित्यकार लेखन के क्षेत्र में अच्छा कर रहे हैं वो अपना नामांकन हमारी आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर करा सकते हैं। हमें उम्मीद है कि यह समारोह हिंदी साहित्य के लिए एक नए युग की शुरुआत करेगा और साहित्यकारों को उनके कार्य के लिए प्रेरित करेगा। हम आपको इस समारोह में आमंत्रित करते हैं और साहित्यकारों के साथ मिलकर हिंदी साहित्य को मजबूत बनाने के लिए हमें आपका भी समर्थन चाहिए। हम अपने उन साहित्यकार मित्रों का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने आज प्रान्ति इंडिया को इतना समृद्ध बनाया है। मेरी दिली तमन्ना है कि आप भी आगामी समारोह में आइए! जहां हम आपको सम्मानित कर पाएं। इन्हीं आशाओं के साथ मैं दिशा निर्देश लिख रहा हूं ...

10 जनवरी 2025, दिन शुक्रवार को वाराणसी में प्रान्ति इंडिया वार्षिकोत्सव 2025 होना तय हुआ है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सम्मान समारोह के दौरान आपको दो प्रकार से सम्मानित करने की व्यवस्था है:

1. ऑनलाइन : जो साहित्यकार नहीं पहुंच सकते या जिनका आना अभी तय नहीं है उन्हें पोस्ट द्वारा उनके नाम व फोटो वाला अवार्ड व प्रमाणपत्र पत्र भेजने की उचित व्यवस्था की गई है।

2. ऑफलाइन : जो साहित्यकार वाराणसी आकर सम्मानित होना चाहते है। उनके लिए सम्मान समारोह के दौरान काव्यपाठ, नाट्य मंचन, गीत-संगीत आदि अन्य कार्यक्रमों की भी व्यवस्था की गई है।

नोट : समारोह में पत्रिका स्टॉल की भी व्यवस्था की गई है। जहां हमारी पत्रिका की एक प्रति आपको निशुल्क प्राप्त होगी।

ट्रेन/बस से आने वाले सभी साहित्यकार को वाराणसी जंक्शन अथवा वाराणसी सिटी के रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड से कार्यक्रम स्थल तक लाने और फिर रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पहुंचाने की उचित व्यवस्था की गई है।

किसी कारणवश न आने की स्थिति में आपको संपूर्ण सामग्री पोस्ट द्वारा भेज दिया जाएगा। जो आपको कार्यक्रम के 7 दिन बाद प्राप्त होगा।

ध्यान दें कि इस वार्षिकोत्सव में केवल पहले 100 साहित्यकार ही सम्मिलित हो पाएंगे। उसके बाद नामांकन की प्रक्रिया बंद हो जाएगी।

इच्छुक साहित्यकार हमारी आधिकारिक वेबसाइट पर फार्म भरकर नामांकन करें।
https://www.prantiindia.com

संपादक, प्रान्ति इंडिया

आपके पत्र

सितंबर अंक के प्रकाशन के लिए अनेक बधाई! पूर्व के अंकों की तरह इस अंक में भी अच्छी रचनाएँ प्रकाशित की गई हैं। डॉ. अनिता जठार की चित्रों सहित परिचय ने उनके बारे में विस्तृत जानकारी और उनके साहित्यिक योगदान पर प्रश्न पूछकर उनके व्यक्तित्व को और निखार दिया है। यह परिचय हमें उनके जीवन और कार्यों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है। 'हिन्दी बने राष्ट्रभाषा', 'मैं एक शिक्षक हूँ', 'जीवन का आधार', 'शिक्षक महान', 'हे गुरुदेव', 'कण कण में गुरु', 'गुरु ज्ञान की मूरत', 'शिक्षक' जैसी रचनाओं ने गुरु की महिमा का बखान कर शिक्षा के प्रणेता सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी को श्रद्धांजलि दी है। ये रचनाएँ हमें शिक्षकों के महत्व और उनके योगदान के बारे में सोचने का अवसर प्रदान करती हैं। इन रचनाओं में शिक्षकों की भूमिका को बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। बद्री प्रसाद वर्मा, रवि ऋषि, विनीत विद्यार्थी, सतीश बब्बा, सुभाषचंद्र, सीमा तोमर, इलाकुमारी जी की कविताएँ निःसंदेह प्रभावशाली हैं। ये कविताएँ हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सोचने का अवसर प्रदान करती हैं। इन कविताओं में जीवन के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा मिलती है। इन कविताओं में कवियों ने अपने अनुभवों और विचारों को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त किया है। शिक्षक एक रचना, संस्कृत वाले सर, उपाध्याय सर, हिन्दी बहन, राघव पंडित जी, मेरा छात्र प्रेम जैसे छोटे परंतु गंभीर संस्मरण पठनीय हैं। ये संस्मरण हमें शिक्षकों के जीवन और उनके अनुभवों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं। इन संस्मरणों में शिक्षकों की भूमिका को बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। इन संस्मरणों में लेखकों ने अपने अनुभवों और विचारों को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त किया है। प्याज पकौड़ा और वो नाश्ता अच्छी रचनाएँ हैं। ये रचनाएँ हमें हास्य और आनंद का अनुभव कराती हैं। इन रचनाओं में जीवन के छोटे-छोटे पलों को बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। इन रचनाओं में लेखकों ने अपने अनुभवों और विचारों को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त किया है। माँ का कर्ज - डॉ. लेखराज शर्मा की लंबी कहानी संघर्ष की दास्तां है जो प्रेरणा देती है। कहानी रोचक है, सरल भी, प्रारंभ करने पर पूरी पढ़ने का मन करेगा। यह कहानी हमें जीवन के संघर्षों के बारे में सोचने का अवसर प्रदान करती है। कुल मिलाकर यह अंक बहुत अच्छा लगा। प्रान्ति इंडिया की पूरी टीम को एक बार पुनः बधाई।

अरुणप्रिय, कानपुर (उ. प्र.)

चित्रकारी

व्यग्र पाण्डे, गंगापुर सिटी (राज.)

आप अपनी चित्रकला कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर भेज सकते है। साथ में मोबाइल नंबर, अपना पूरा पता व एक फोटो अवश्य भेजें। चयनित पेंटिंग को आपके नाम, पता व फोटो के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

साक्षात्कार

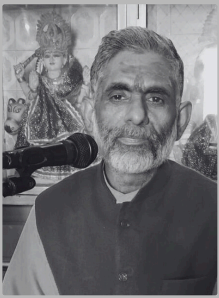

डॉ. विनीत विधार्थी एक विद्वान, साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी विद्वत्ता, क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी ने उन्हें एक आदर्श व्यक्ति बनाया है। उनके साहित्यिक योगदान में कई पुस्तकें और लेख शामिल हैं जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित हैं।

शैक्षणिक योग्यता :
डॉ. विधार्थी, एक विद्वान और साहित्यकार, जिनकी शैक्षिक योग्यता और उपलब्धियों ने उन्हें एक आदर्श उदाहरण बनाया है। उनकी शैक्षिक यात्रा में पीएचडी, एमडी, एलएलएम, बीएड, एचएमएलएस, ज्योतिष बारिधि, ज्योतिष प्राज्ञ, तंत्र भूषणाचार्य, और वेद निपुण जैसी डिग्रियाँ शामिल हैं। डॉ. विधार्थी की शैक्षिक योग्यता एक आदर्श उदाहरण है जो हमें शिक्षा के महत्व को समझने में मदद करती है। उनकी शैक्षिक योग्यता ने उन्हें व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद की।

अनुभव :
डॉ. विधार्थी एक विद्वान और सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी शिक्षा, साहित्य, ज्योतिष, तंत्र और सामाजिक कार्य में विशेषज्ञता है। वे गायत्री विद्यापीठ पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रबंधक हैं और कई पुस्तकें और लेख लिखे हैं। उनकी सामाजिक जिम्मेदारी ने उन्हें एक आदर्श व्यक्ति बनाया है। डॉ. विधार्थी के अनुभव हमें यह सीखने को मिलता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देना और सामाजिक जिम्मेदारी निभाना महत्वपूर्ण है। उनकी विद्वत्ता और क्षमता ने उन्हें एक प्रसिद्ध व्यक्ति बनाया है। डॉ. विधार्थी का जीवन एक आदर्श उदाहरण है जो हमें जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

साहित्यिक योगदान :
डॉ. विधार्थी का साहित्यिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कई पुस्तकें और लेख लिखे हैं जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित हैं। उनकी रचनाएं साहित्य, दर्शन, ज्योतिष और तंत्र पर आधारित हैं। उनकी पुस्तकें "गायत्री जीवन का आधार", "यज्ञेन पापेन बह्रिर्भुक्ता" और "तंत्र मंत्र यंत्र का इतिहास" विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनकी साहित्यिक क्षमता ने उन्हें एक प्रसिद्ध साहित्यकार बनाया है। उनके लेखन में ज्ञान, अनुभव और भावनाएं समाहित हैं। उनका साहित्यिक योगदान भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

निष्कर्ष :
डॉ. विधार्थी एक विद्वान, साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उनकी विद्वत्ता, क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी ने उनका व्यक्तित्व विनम्र, नम्र और दृढ़ बनाया है। इन्होंने जीवन को समाज की सेवा में समर्पित किया है।

दो अनमोल रत्न

दो अक्टूबर का शुभ है,
दिन आज का दिन बड़ा महान।
भारत की पावन भूमि पर,
जन्म लिए दो लाल।
एक थे गाँधी दूसरे लाल थे
लाल बहादुर शास्त्री।
इन दो फूलों से महका
है सारा हिंदुस्तान।
साबरमती के संत राष्ट्रपिता कहे जाते थे,
प्यार सम्मान से बापू उन्हें बुलाते थे।
भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियों को,
काटने का उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया।
बुद्ध के दया और अहिंसा के थे पुजारी,
वैष्णव जन के तेने कहिए
उनका वचन था।
विदेशी कपड़ों का त्याग कर
स्वदेशी का महत्व समझाया।
कई आंदोलन सत्याग्रह किए,
वह मौन सत्य का आग्रह था।
दांडी मार्च की गूँज बड़ी थी,
हर दिल में नयी उम्मीद जगाती।
नमक सत्याग्रह से बापू ने,
दुनिया को संदेश दिया।
हरिजन दलितों को ऊपर उठाया,
भेदभाव मिटाकर देश को,
एकता का पाठ पढ़ाया।
बिना खड्ग बिना ढाल के,
देश को आजाद करवाया।
सत्य अहिंसा के मार्ग पर,
चलकर अंग्रेजों से लड़ी लड़ाई।
जिसमें हिंसा और रक्त नहीं था,
आजाद हिंद का बलिदान था।
सच की ताकत के आगे,
तोपों की हिम्मत हारी थी।
हट गया अंग्रेजों का ध्वज,
आजाद तिरंगा लहराया था।
तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालीस में,
वीर गति को प्राप्त किए।
लाल बहुत हैं किन्तु एक लाल हैं
'लाल बहादुर शास्त्री '।

थे लाल बहादुर शास्त्री इस ,
आजाद भूमि के रखवाले।
भारत रत्न के लोकप्रिय नेता,
स्वतंत्र भारत की पहचान बनी।
सैनिकों में उत्साह बढ़ाया,
कृषकों का सम्मान बढ़ाया।
तभी तो दिया नारा उन्होंने,
जय जवान-जय किसान का।
झेले थे झंझावत कई ,
संघर्षमय जीवन रहा।
राह में आने वाली रुकावटों से,
मिलती थी शक्ति उन्हें।
उनका व्यक्तित्व ही निराला था,
कठिन श्रम निष्ठा इनका मंत्र था।
उनके दृढ़ अनुशासन से ,
पाक हिंद से हारा था।
शांति हेतु गए ताशकंद समझौते में वहीं,
ग्यारह जनवरी उन्नीस सौ छीआसठ को
वीर गति को प्राप्त किए।
शत् शत् नमन मेरा बापू और शास्त्री जी
को।

पूनम लता
झारखण्ड

लाल बहादुर

लाल बहादुर नाम था उनका
लगते थे जैसे प्रभुजी के दूत।

सरल सहज जीवन वाले वह
ज्ञान के थे वह परम निधान।
दो अक्टूबर अवतरण हुआ
परम चतुर वे सहज सुजान।
कठिनाई सारी वे रहे जीतते
दिया भाग्य ने जिसे अकूत।

वीर लाल वे मुगलसराय के
कर्मठता जिनके थी रग रग।
था रहा देशहित लक्ष्य हमेशा
नतमस्तक आगे उनके जग।
सत्य अहिंसा के थे संवाहक
भारत माता के वे वीर सपूत।

'जय जवान जय किसान' का
उनका अपना इक नारा था।
विश्व शाँति की चाहत उनकी
हर मानव उनको प्यारा था।
'शास्त्री' उपाधि मिली उनको
चाहत बाँधे जग एक ही सूत।

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
दिल्ली

सीख

बचपन में सीख गया था
जो सत्य की राह पर चलना
साया नहीं पिता का सर पर
सीख गया वह कठिनाइयों से लड़ना।

सादा जीवन उच्च विचार
पहली प्राथमिकता सबका हो कल्याण
कितना बड़ा ओहदा मिल जाए
अभिमान ना उसमें तनिक भी मिल पाए।

छोटी-छोटी खुशियों से
उसने जीवन अपना सवांरा था
माँ की खातिर उसने
विवाह को भी स्वीकारा था।

राह जेल की अपनाई
लेकिन उसमें तनिक न करी ढिलाई
खादी के धोती कुर्ता टोपी पहनकर
विदेशों तक में सब की शान बढ़ाई।

केवल बड़ों को ही नहीं
छोटो को भी शालीनता सिखलाई
देश के लिए समर्पित कर जीवन अपना
शास्त्री जी की अमर कहानी आज फिर
सबने दोहराई।

हरमिंदर कौर
अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

हम सब की हिंदी

हिंदी प्रसार
तुम उत्तराधिकार
रहो तैयार
हिंदी का ही उपयोग
हर क्षेत्र में करें लोग|

हिंदी की प्रगति
तुम्हारी बने नियति
तुम्हारी भी प्रगति
करो खूब हिंदी का विकास
वृहत हो हिंदी का व्यास|

हिंदी का सम्मान
तुम्हारा भी उत्थान
मन से लो मान
सबको दिलाओ विश्वास
हिंदी कोहिनूर तुम्हारे पास|

राजीव कुमार
बाँका, बिहार

वीर कुंवर सिंह

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
के प्रथम सिपाही
वीर कुंवर सिंह कहलाते हैं ।
आज़ादी की पहली गाथा
वीर कुंवर सिंह गाते हैं ।
कुशल सेनानायक बन
अस्सी के उम्र में भी लड़ने जाते हैं ।
धनी मूंछों पर ताव देकर
राजपूतों की शान बढ़ाते हैं ।
अद्भुत वीरता का मालिक कुंवर
आन - बान- शान की
मिसाल कहलाते हैं ।
बिहार के जगदीशपुर में
एक फ़ौलादी का जन्म हुआ है ।
मन प्रमुख नेता बिहार में
ब्रिटिश को धूल चटाते हैं ।
और आरा पर क़ब्ज़ा करके
ख़ूब नाम कमाते हैं ।
और जन जन के मन में
राष्ट्रभावना जगाते हैं ।
दृढ़ इच्छाशक्ति हों तो
मार्ग में आए बाधा को भी
विचलित कर जाते हैं ।
चीते सा था वीर कुंवर सिंह शिकारी
ऊँची छलांग लगाते हैं ।
डटे रहो दुश्मन के सामने
हमें यह सीख दे जाते है ।
भले ही हाथ कटानीं पड़े
जय हिन्द का नारा लगा
कर बाएँ हाथ हो गंगा जी को
भेंट चाहते हैं ।
वीर कुंवर भीष्म पितामह कहलाते हैं
सत्तावन की क्रांति में विगुल बजाते हैं ।
ऐसे वीर योद्धा का हम गीत सुनाते हैं
पुरुषार्थ से भरीं जिसकी कहानी है ।
जिंदगानी जिसने झोंक दी देश की ख़ातिर यही
भारती का सच्चा सपूत कहलाते हैं ।

नीरज वर्मा
हीनू (राँची)

साबरमती के संत

साबरमती के संत तु है
तुने कर दिया था सावधान,
सत्य अहिंसा पथ पर है
मिल जाएगा हर समाधान।

बापू तेरा मंत्र जो था है
जात पात हो विनाश अज्ञान,
सब का ख़ून बराबर है
मानवता ही तेरा पहचान ।

भारत हमें सबसे प्यारा है
हिन्दुस्तान हमारी जान,
मर मिटेंगे देश के लिए है
आखिर सांस हो अरमान ।

भगत, नेहरू,शास्त्री जी है
पथरीली राहों की जवान,
शहीद बनेंगे कायर नहीं हैं
बढ़ाएं कदम हम निशान।

इन्कलाब जिंदाबाद नारा है
देशवासियों को किया गुमान,
स्वतंत्रता हमें ख़ून से प्यारा है
दे दिया तू ने सब के जुबान ।

साबरमती के संत तु है
तु बड़ा ही महात्मा महान ,
अमर तेरा मोहन मंत्र है
युग युग जिया तेरा बलिदान।

साबरमती के संत तु है
तुने कर दिया सावधान ....

सुनीता नायक एस एन
भुवनेश्वर, ओडिशा

गांधीजी के सिद्धांत

२ अक्टूबर १८६९ को पोरबंदर में जिसने जन्म लिया,
पुतली बाई मां पिता करमचंद ने मोहनदास नामकरण किया,
पीर पराई देख जिसकी आंखें और हृदय भर आता था,
करूणा दया देख टैगोर ने जिन्हें महात्मा नाम दिया।

माता के गुरु श्रीमद राजचंद्र जैन धर्म के अनुयायी थे,
गांधीजी के विदेश जाने पर मां के मन में चिंता समाई थी,
गुरु चरणों में जैन धर्म के सिद्धांतों को अंगीकार किया,
मद्य मांस का त्याग किया ब्रम्हचर्य से रहने की शपथ दिलाई थी !

सदाचार करूणा और दया का बीजारोपण यहां हुआ,
महावीर के मूल सिद्धांत को गांधी जी ने ग्रहण किया,
सत्य अहिंसा को अन्याय के विरुद्ध शस्त्र बना,
विदेशों में भी गांधीजी ने सत्याग्रह का डंका बजा दिया।

गांधीजी की अहिंसक आंदोलन से देश को नई दिशा मिली,
असहयोग जैसे आंदोलनों से अंग्रेजी शासन की नींव हिली,
लाठी डंडे गोलियां चला चला जब हुकूमत हार गई,
तब जाकर भारत माता को बेड़ियों से आज़ादी मिली !!

काया जर्जर होती गई पर आत्मशक्ति उनकी बढ़ती रही,
गोडसे की वैमनस्यता गोली बन उनमें समा गई,
हे राम! के उद्घोष के साथ गांधी जी ने प्राण त्याग दिए,
एक बार पुनः नफरत से प्रेम सद्भाव की भावना जीत गई !!

स्वतंत्र भारत में सबको स्वमान से जीने का अधिकार मिले,
कर्त्तव्य निभाएं भारत की प्रगति को एक नया आधार मिले,
द्वेष घृणा न हो आपस में मिल जुलकर सब रहा करें,
गांधीजी के सपनों के भारत को नया आकार मिले!!

सभी जीव स्वतंत्र रहें पर स्वच्छंद ना कोई हुआ करे,
संस्कारों और संस्कृति की जड़ों से हर कोई जुड़ा रहे,
गांधीजी के आदर्शों को भारतवासियों को अपनाना है,
आज़ादी के अमृतकाल में भारत विश्व विजयी बना रहे!!

विरेन्द्र जैन
नागपुर

पुण्य धरा

हुआ जन्म महात्मा गांधी का,
गुजरात की पुण्य धरा थी वो
अपनाके सत्य अहिंसा को,
आजाद कराया भारत को।।
बाल्यकाल में मोहन नाम मिला,
किया काम उन्होंने मोहन सा।
कृष्णा गोकुल के मसीहा थे,
भारत का मसीहा वो है बना।।
शाकाहारी जीवन है जीया,
खादी का खूब प्रचार किया।
चरखा देकर जन मानस को,
भारत का भार उतार दिया।।
प्रारंभिक शिक्षा भारत में,
शिक्षा कानूनी लंदन में।
किए हैं अहिंसक आंदोलन,
बापू ने अपने जीवन में।।
सत्याग्रह का संदेश दिया ,
हिंसा से दूर रहें वो सदा।
नैतिकता संग अनुशासन का,
बापू ने हमेशा पथ ये चुना।।
मानी न हार अंग्रेजो से,
चाहे जेल उन्हें जाना भी पड़ा।
अपनाई अहिंसक नीति भले,
अंग्रेजों पे भारी वो पड़ा।।
पंडित जवाहर नेहरू ने,
दिया राष्ट्र पिता का नाम उन्हें।
और दी है उपाधि महात्मा की,
नोबल विजेता टैगोर ने।।
लिखी कई पुस्तकें गांधी ने,
पाए विचार उनके हमने।
अभिनंदन करते बार बार,
उस महामानव के चरणों में।।
सन् उन्नीस सौ सेतालिस को,
अपना भारत आजाद हुआ।
सन उन्नीस सौ अड़तालिस को,
साबरमती संत भी विदा हुआ।।

ज्योति चौपड़ा

बापू के नाम

पाती एक लिखी है बापू के नाम

पाती एक लिखी है, हमने प्यारे बापू के नाम।
सभांल के रखना इस देश को अब हमारा काम।

सत्य अहिंसा की ज्वाला जो दिल में जलाई है।
बुझने न दी हमने लौ को, आंधी तो खूब आई है।
भेदभाव कभी न रखेंगे, कभी न करेंगे क्रोध।
तेरे आदर्शों पर चलेंगे, न करेंगे कोई बुरा काम।

संघर्ष किया तुमने, तब जाके हुए हम आजाद।
तेरे त्याग को हरगिज, हम न होने देंगे बर्बाद।
देश ये सारा हरदम, करता रहेगा तुझको याद।
साबरमती के संत, तुम्हें मेरा है शत शत प्रणाम।

गांधी जी के तीन बंदर, देते हमको ये संदेश।
बुरा न बोलो, बुरा न सुनो, भाई बुरा मत देख।
सुंदर और स्वच्छ भारत, बापू का था सपना।
तैयार हैं हम करने को बापू का सपना साकार।

दुबली पतली काया थी, फिर भी चलते सीना तान।
मिट गए गांधी जी, पर न मिटने दी तिरंगे की शान।
सादा जीवन था उनका, थे आप देश का अभिमान।
तेरे जैसे हम भी बनेंगे, भारत माता की वीर संतान।

आशीर्वाद तेरा रहा तो मुश्किलें हो जाएंगी नाकाम।
संभाल कर रखना इस देश को अब हमारा काम।

सुशी सक्सेना
इंदौर, मध्यप्रदेश

स्मृतियां

स्मृतियां कभी व्यर्थ,
अनावश्यक नहीं होती !
होते है उनमें, बीते हुए
पल-प्रतिपल की कुछ छवि....
वो सारी खुशियाँ,दुख,
गलतियां और पश्चाताप भी...
भीड़ में पाते हैं जब,
खुद को तन्हा कभी...
तो खुल जाती है अपने ही समक्ष ..
वो विस्मृत यादे भी,वो सभी स्मृतिया...
एक पोटली की तरह...
और बिखर उठते है पल-पल के,
प्रत्येक क्षण मोती बन के
स्वयं के ही दामन में!
मैंने दिल के आँगन में,
ना भुलाये जाने वाले,
कुछ रिश्तों को ...
संजोकर रख लिया था !
और उगायी थी...
प्रेम स्नेह अपनत्व की
इक पौध मन आंगन में!
जो ना जाने कब
फूलों से भर महक उठा था
मेरा हर पल -प्रतिपल, प्रत्येक क्षण.....!
जो बन गया था
हरसिंगार के फूलों का,
खुशबुदार दरख्त ...
जिसकी खुशबु से सरोबार होती हूँ
जब स्वयं के साथ होती हूँ मैं !
या फिर पाती हूँ स्वयं को तन्हा...
जिंदगी के किसी भी मोड़ पर,
तो बरबस ही खींच लेते है
ध्यान मेरा अपनी ओर, तब.....
झरा करते है उनमे से अनगिनत,
हारसिंगार के फूल...
जिनकी खुशबू से भीग जाता है
मेरा तन-मन...
और महक उठता है अंतर्मन .....
अपरिमित मुस्कराहट के साथ
स्मृतियां कभी व्यर्थ नहीं होती......।

सपना अग्रवाल
मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

मेरे भाग में

नागफनी उगते रहे
दिल के रेत में
विषधर डँसते रहे
मन के खेत में
नागफनी और विषधर मेरे भाग में
जल गए नसीब सहरा की आग में...।
लघु रही उड़ान
कमजोर पर थे
मौन रही शान
कच्चे घर थे
लघुता और मौन मेरे भाग में
जल गए नसीब दुर्बलता की आग में...।
फिसलन भरे रास्ते
डगमगाते रहे कदम
दर्द भरे हादसे
सहलाते रहे ज़ख्म
फिसलन और दर्द मेरे भाग में
जल गए नसीब हादसों की आग में...।
धोखा देते रहे
बंधु-बांधव अपने
ज़हर घोलते रहे
अच्छे बुरे सपने
धोखा और ज़हर मेरे भाग में
जल गए नसीब दोस्ती की आग में...।

डॉ नीरज पखरोलवी
पखरोल, हमीरपुर
हिमाचल प्रदेश- 177038

निर्वाण

सागर मध्य फँसा "प्रीत"
ना नाविक है ना नौका ।।
स्व निर्वाण का यह
खेल देखे अनोखा ।।

देख चहुँ ओर सागर ही सागर
चक्षुओं से बहे पाखर ।।
वसुधा पर जाने को तरसे
नैनों से निरंतर मेघ बरसे ।।

थका है अभी; हारा नहीं
अकेला है, कोई सहारा नहीं ।।
जिजीविषा है हृदय में
आशाओं से रिक्त नहीं ।।
किनारे पर ना पहुँचे जब तक
तोड़ेगा तब तक दम नहीं ।।

वरुण उसे डूबाना चाहे,
प्रभाकर भी तपन बढ़ाए ।।
इस जटिलता में भी "प्रीत"
चले मंज़िल नैनों में गढ़ाए।।

दम उसका चरम सीमा पर ;
स्वेद से लथपथ देह है ।।
किन्तु हार ना माने वह
स्वयं में साक्षात देव है ।।

प्रीतेश बुनकर “प्रीत”
बांसवाड़ा (राजस्थान)

जगमग - जगमग

जगमग-जगमग ज्योंत जले,
दीप मेरी जलती रहें।
कोई भी घर रहे ना सुना,
जब मां आये तो चरण है छूना।
दीपों से मैंने घर को सजाया,
रंगोली मैंने आंगन में बनाया।
मिल-जुल कर हम साथ रहे
लाई काजू,लाई बर्फी,
लाई मैंने अनेक मिठाइयां।
जब सुना मां पधार रही हैं घर में मेरे,
बनाई मैंने फूलों की आसन।
हमें मिलकर अब अंधेरे को भगाना है,
दीप साथ में मिलकर ही जलाना है।
भगाना है हमें डर को,
भगाना है कमजोरी को भी।
जलते रहना है दीपक की तरह,
अमावस्या की रात में भी,
या घनघोर बादल के बरसात में भी।
डटे रहना है हमें अपने पथ पर,
हवाओं से भी लड़ना है,
मगर उर्फ़ न करना है।
जलते रहना है दीप की तरह,
साथ मिले जब तेल और बाती,
तब है दीपक अंधेरे को भगाती।
जगमग जगमग ज्योंत जले,
दीप मेरी जलती रहें।

नेहा चौरसिया
असम

बंगाल दुर्घटना

जब चारा-गर, गर चारा बन जाए।
फिर मरीज़ों की जान कौन बचाए?

एक अस्मत लुटा गई, जान भी गवाँ गई,
कई धरने पर बैठे, कहीं इंसाफ मिल जाए।

क्यों निकले फिर घर से कोई लड़कियाँ,
दरिंदे जब कानून से ज़रा ख़ौफ़ ना खाएँ।

सड़क पर मोम ले निकलने से क्या फायदा,
अंधों के शहर में रौशनी कोई देख ना पाए।

वहाँ दिल्ली दूर ही नज़र आती है, और यहाँ,
सरकार मौन बैठी, जाने क्या राज़ खुल जाए।

देवेश साखरे 'देव'
दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रसाद घोटाला

धर्म जब अपना अर्थ खो देता है।
धार्मिक भी तब सामर्थ्य खो देता है।
आवश्यकता अभी रक्त में उबाल की है,
जो क्रोध अन्यथा व्यर्थ खो देता है।

वो और थे जो अधर्म के विरुद्ध विद्रोह कर गए।
चर्बी युक्त कारतूसों के विरुद्ध राजद्रोह कर गए।
धार्मिक चेतना आज जनमानस की कहाँ खो गई,
जो ये आस्था को आहत अनिरुद्ध द्रोह कर गए।

जब स्वार्थ विवेक पर छाता है।
तब अधर्म मनुष्य कर जाता है।
श्रीहरि आश्रय भी इन्हें रास नहीं,
आस्था भी इनके मर जाता है।

लालच ने आस्था बेच दिया।
प्रभु भोग व्यवस्था बेच दिया।
आत्मसम्मान बचा है या उसे भी,
स्वयं सनातनी अवस्था बेच दिया।

यहाँ आस्तीन में ही सांप पले हैं।
दूसरे विधर्मी हमें कहाँ छले हैं।
दूसरों से हमें अब क्या आशंका,
अपने जब अधर्मी संस्कार में ढले हैं।

किस स्तर तक ये गिर सकते हैं।
पाप अक्षम्य भी ये कर सकते हैं।
अधर्मियों से धर्म की रक्षा के लिए,
सुप्त समाज हुंकार भर सकते हैं?

इस कुकृत्य का जिम्मेदार कौन है?
संस्थान या सरकार, दोनों मौन हैं।
भक्तों का दान, अनुदान कहाँ जाता है?
ज्ञात नहीं लाभ, अनुलाभ कौन पाता है?

देवेश साखरे 'देव'
दुर्ग, छत्तीसगढ़

भारत के शिल्पकार

घोरघट की लाठी थामे, सत्य
अहिंसा के अनुयाता।
भेदभाव की जड़ मिटाने, तीव्र
बुद्धि के ये थे ज्ञाता।।

भारत के कल्याण की ख़ातिर,
खाई जिसने जेल की रोटी।
नमन करते उस राष्ट्र नेता को,
जिसने जगाई देश सेवा की
ज्योति।।

स्वदेशी विचार जनमन में गढ़
कर, भारत का कल्याण किया।
साम्राज्यवादी ब्रिटैन की रीढ़ पर,
चरखे से ही वार किया।।

राजघाट के हे राम! शब्द का
नाता भी, बापू से कुछ यूँ जुड़ा।
एक रोज़ अँधेरे के डर पे, राम
नाम हावी हो पड़ा।।

समय बड़ा बलवान था, पर
गांधीजी का वो दाव था।
सदुपयोग भी कुछ ऐसा हुआ की,
स्वतंत्र राष्ट्र अंग्रेजों पर फिर एक
घाव था।।

हो गए बलिदान वो शिल्पकार,
जिसने लाठी न चलाई कभी।
अमर हो गए विचार उनके, पर
लोगों को समझ न आई कभी।।

अलीशा शेख
बैकुंठपुर, कोरिया (छत्तीसगढ़)

किससे कहूं

मैं कुछ कहना चाहता हूँ
लेकिन किससे कहूँ
डर लगता है
इससे कहूँ, उससे कहूँ
किससे कहूँ आखिर
जिससे भी कहूँ
वह कहीं और कह देगा
मेरा मजाक बन जाएगा

सुनाने के लिए बहुत लम्बी कहानी नहीं है
फिर भी डर लगता है
क्योंकि डरा हुआ हूँ भीतर से
सोचता हूँ दीवारों से कहूँ
लेकिन सुना है दीवारों के कान नहीं होते
कभी सोचता हूँ पशु-पक्षी, नदी - नाले,
पेड़-पौधों को ही सुना दूँ
पर वे प्रतिक्रिया नहीं देंगे
आइने से कहूँ, बात नहीं बनेगी

कौन है जो मेरी बातों को सुनेगा
और किसी से न कहेगा
एक है जिसे मैं जानता हूँ
पर मैं तो कब से चिल्ला रहा हूँ
वह सुन ही नहीं रहा है

प्रेमचन्द ठाकुर
बोकारो, झारखण्ड

चाँद

तुम भी बदले, मैं भी बदला,
चाँद वही है अब भी,
देखो चाँद की नज़र से हम तुम,
जुदा नहीं हैं अब भी,
याद करो वो चाँद की रातें,
चाँद था, तुम थीं, मैं था,
बता रहा था चाँद, चाँद को
याद है सब कुछ अब भी,
चाँद ही तो था जिसके ज़रिये,
बातें हम करते थे,
चाँद ही तो था साझा जिससे,
खुशियाँ ग़म करते थे,
याद है तुमको क्या अब भी,
वो आधा चाँद गगन में,
कोशिश की थी जिसको मैंने,
ढालने की कंगन में,
कभी बालियां बना तुम्हारी,
कभी बना कंगन था,
किस्मत वाला चाँद देखता,
तुमको भरे नयन था,
बन हमराही चला हमेशा,
चाँद हमारे संग में,
लेकिन फिर भी रंग ना पाए,
हम तुम उसके रंग में,
चाँद तो अब भी वहीं है लेकिन,
हम अब साथ नहीं हैं,
बीत चुके हैं वर्षों जबसे,
अपनी बात नहीं है,
अब तो मुमकिन नहीं है मिलना,
या बातें कर लेना,
हाँ पर तुमको चाँद दिखे तो,
याद मुझे कर लेना,
हाँ पर तुमको चाँद दिखे तो,
याद मुझे कर लेना।

मुकेश जोशी 'भारद्वाज'
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

माँ शैलपुत्री देवी

अभिनन्दन स्वागत करें,पर्व सनातन धर्म।
पावन नित नवरात्रि में,दुर्गा पूजन कर्म।।१।।
शुक्ला चैत्री प्रतिपदा,सनातनी त्यौहार।
नव दुर्गा आराधना,कीर्ति मिले सुख सार।।२।।
दिवस प्रथम नवरात्रि का,शुक्ला पावन मास।
मातु शैलपुत्री नमन,प्रीति भक्ति विश्वास।।३।।
पार्वती जगदम्बिके,कल्याणी संसार।
कलश स्थापना आज माँ,नवदुर्गा अवतार।।४।।
पूजनार्थ नवरात्र में,आवाहन जगदम्ब।
मातु शैलपुत्री प्रथम,राष्ट्र शक्ति अवलम्ब।।५।।
करें ध्यान गिरिजा सुता,भर दे शक्ति प्रयास।
त्रिविधा विपदा जिंदगी,हरो भौतिकी फाँस।।६।।
नवधा शक्ति शैलजा,मातु किशोरी रूप।
साध्वी श्रद्धा रूपिणी,पूजें जन सुर भूप।।७।।
पार्वती जगदम्बिके,कल्याणी संसार।
कलश स्थापना आज माँ,नवदुर्गा अवतार।।८।।
सरसिज वदना शैलजे,नीति रीति सम्प्रीति ।
मति विवेक सद्ज्ञान दे,जीवन यश नवनीत।।९।।
नीति प्रीति सुख संपदा,परहित सुख सम्मान।
वर दे माँ वृषवाहिनी,भक्ति सबल यश गान।।१०।।
सबसे सबकी बन्धुता, सांस्कृतिक अभिमान।
दो मानव को शैलजा,राष्ट्र प्रेम वरदान।।११

डॉ. राम कुमार झा "निकुंज"
नई दिल्ली

मन की बात

मन की बात...
मन में ही रह गई...
सरे आम नहीं बताना चाहते थे...
की...
कहीं बदनाम ना हो जाओ तुम...
मन की बात...
मन में ही रह गई।।१।।

मन की बात...
मन में ही रह गई...
कशमकश में थे हम...
की...
कहें या ना कहें...
खोना नहीं चाहते थे, तुम्हें...
मन की बात...
मन में ही रह गई।।२।।

मन की बात...
मन में ही रह गई...
काश!...
तुम मौन की भाषा समझ
पाती...
काश!...
हम तुम्हें बता पाते...
मन की बात...
मन में ही रह गई।।३।।

मन की बात...
मन में ही रह गई...
बता कर तुम्हें खोते...
खुशी होती बता पाए तुम्हें...
ऐसे भी तुम्हे खोया...
वैसे भी तुम्हे खोया...
बस!...
मन की बात...
मन में ही रह गई।।४।।

अच्युत उमर्जी
पुणे, महाराष्ट्र

गर्भवती सूअरी

वह बेचैन है
इधर -उधर भाग रही है
हरे हरे पत्तों की तलाश में...
कंटीले तारों में मुंह के अग्र भाग को घुसाए
झाड़ से हरे पत्तों को दांतों में दबाए
ढ़हे हुए मकान में
हरे पत्तों का बिछावन कर रही है
यह क्रम बीस से पच्चीस बार
दुहराई गई
सृष्टि की ऐसी मां
अपने बच्चे को जन्म देने के
कुछ घंटे पहले तक
प्रयत्नशील थी
एक ऐसा संघर्षशील दृश्य
जो आंखों के सामने घटित हो रहा था
मेरे अंदर ढ़ाल के रूप में
निर्मित हो रहा था
जैसे सृष्टि की हर एक क्रिया में
पाठ होता है
ठीक वैसे ही मेरे स्त्रियोचित मन में
एक ठोस अनुभव का उबाल था
एक ऐसा अनुभव जो सदियों से
रक्तिल था
इंसानों द्वारा किया गया भ्रूण हत्या जैसा पाप कर्म
गर्भवती सूअरी के दृश्य में आ धमकता...?
आज वह सात बच्चों की मां बन गई है
आम के घने वृक्ष के नीचे
कीचड़ में सने शरीर के साथ
निढ़ाल अवस्था में लेटी
बच्चों को स्तनपान कराती
प्रकृति के आनंद में अपनी आंखों को
बंद किए खोई
मटमैली सी सूअरी।

इला कुमारी
गोपालगंज (बिहार)

कोई गाँधी बन पाता

बापू, तुम्हारे जन्म दिवस पर
स्वार्थ में अंधे चंद लोग
राष्ट्रीय पर्व मनाने की
रस्म अदायगी तो कर देंगे
पर स्वयं गाँधीवादी नहीं बनेंगे.
उन आदर्शों का अनुकरण नहीं करेंगे,
जिन्होंने तुम्हें महात्मा बना दिया.
तुम्हारी संगमरमरी मूर्ति पर
माल्यार्पण कर,
तुम्हारे चित्र को
सरकारी कार्यालयों में टांग कर
डाक टिकटों पर छाप कर
या सिक्कों पर ढाल कर
तुम्हें सम्मान का रिश्वत दिया जाता है
जिसकी लालसा तुम्हें नहीं रही.
तुम्हारी नज़रों के सामने ही
गीता पर हाथ रख कर लोग
झूठ बोलने का संकल्प लेते हैं.
जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में
भ्रष्टाचार पल रहा है,
सत्य, अहिंसा और मानवता का
अस्तित्व समाप्त हो रहा है...
ऐसे में शोषण और भ्रष्टाचार से
समाज की मुक्ति के लिए,
मानव को मानव से जोड़ने के लिए,
राष्ट्र की एकता, अखंडता
और सहिष्णुता की रक्षा के लिए-
आज फिर तुम्हारी जरूरत है.
काश, तुम फिर आते,
काश, कोई गाँधी बन पाता....

विनोद प्रसाद
पटना (बिहार)

एक विश्वास

बहुत मुद्दत के बाद मिली हो
जी भर के देख लेने दो।
होठों से होठों को
आज चुम लेने दो।

वर्षो तक सहकर जुदाई
हम जिन्दगी जीते रहे।
जब भी आती तेरी याद
नाम तेरा लेते रहे।

वो पुरानी यादें आज
सब याद आ रही है।
छुप छुप कर करते थे बातें
एक एक कर सब याद आ रही है।

अब न जाना छोड़कर हमें
कसम है इस बात की तुम्हें।
अब साथ रहोगी जीवन भर
तुमपर पुरा विश्वास है हमें।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
गल्ला मंडी गोलाबाजार
273408
गोरखपुर उ प्र.

शब्दहीन चीख

सन्नाटा चादर सा ओढ़े,
खाली सड़कों पर वो चलती।
उसके सपनों की दुनिया में,
आस की लौ बस जलती।

बिना डरे, बेमौसम आया,
कोई अनजाना इंसान।
भरोसा और रूह को चीरा,
सब कुछ लगा अनजान।

चीख न कोई सुन पाया,
आँखों में आंसू भरे रहे।
ठंडी रात गवाह बनी जब,
इज्जत के फूल बिखरे रहे।

कोई कहे भले बेरहम,
क्रूरता की हद पार की।
इस बस्ती में रहते-रहते,
मानवता ने हार मानी।

समाज ने कान क्यों बंद किए?
आँखों पर क्यों पर्दे रहे?
सवालों की चाह में डूबे,
उम्मीद के सुर ताल रहे।

आशीष की दुनिया में पली,
माँ की छाया कहाँ छिपी।
उसके आँसू की बूँदें,
किसी का दिल पसीज गया।

पर उसके अंदर की आग,
ताकत की मिसाल बनी।
दर्द की चिंगारी से निकली,
वो एक मशाल बनी।

उसने खुद को जीवनदायी
बदलाव का वादा किया।
अँधेरे को चीरते हुए,
नई सुबह का आगाज़ किया।

उसकी चुप्पी अब गूँजेगी,
हर जगह हलचल मचेगी।
दर्द से सीख लेकर,
ये लड़ाई नया रूप लेगी।

अंजना गोमास्ता
रायपुर, छत्तीसगढ़

युगों-युगों तक

युगों-युगों तक रहेगी स्मरण
एक ऐसी गाथा महाभारत की
हृदय में छप गया है जो सबके
दृश्य है वो द्रोपदी के चीर हरण का।।

बिछाई अर्धमियों ने चौपड़
फेंककर पाँसे छल के.....
जज्बातों से,अहसासों से,
इंसानी प्यादो से वो छली गई
कौरवों के दुःस्साहस की मारी
वो अभागी नारी कुरुवंश की
पुत्रवधू द्रोपदी ही थी......

युधिष्ठिर को बोले दुर्योधन
मृगनयनी को ले आओ
तुम स्वयं को तो हार चुके हो
द्रोपदी को अब दांव पर लगाओ ।।

दुशासन का साहस तो देखो
कक्ष की ओर वो चल पड़ा ......

मैं एक वस्त्र में लिपटी हुई हूँ
यज्ञासनी ने दुशासन से कहा
कुरुवंशियों की मैं मर्यादा हूँ,
क्या इस हालत में मुझे
सभा में लेकर जाओगे ।।

दुश्शासन ने तब एक न मानी
बालों से पकड़ कर उसे घसीटा
पूरी स्त्री जाति के सम्मान को
तब उसने अपमानित किया ।।

पाँडव हृदय ग्लानि से भर
बन अपराधी सर झुकाये खड़े रहे....
हाथ जोडकर कर मृगनयनी
विलाप करती रही...
नज़रें सबकी झुकी रही
किसी ने भी न आवाज़ उठाई।।

गांडीवधारी अर्जुन तुम कैसे
पतिधर्म निभाना भूल गएं
पांचों पांडव निस्सहाय से
पांचाली की अवहेलना को देखते रहें ।।

धृतराष्ट्र से पांचाली बोली
मैं पुत्रवधू हूं आपकी
कुछ तो मुझ पर रहम करो
पुत्र प्रेम में पड़कर
न तुम इस समय मौन रहो।।

भीष्म पितामह अपनी
सौगंध से बंधे मूक होकर
सब देखते रहे

भरी सभा को मूकदर्शक देख
असहाय होकर द्रौपदी ने
अपने सखा कान्हा को गुहार लगाई
तब द्वारकाधीश ने
अपनी सखी के वस्त्रों से
वस्त्र जोड़कर उसकी
अस्मिता की लाज बचाई।।

सीमा चुघ
नोएडा, उत्तर प्रदेश

दिली तमन्ना

हर मजदूर को अपने श्रम का दाम मिले,
मेरी कामना उसे मनचाहा काम मिले,
जो जीवन भर भटकता रहता है,
उसको भी पल दो पल आराम मिले,
जिनकी मेहनत से रौशन है दुनिया,
जिनकी मेहनत रंग लाती है,
उनको भी कुछ नाम मिले,
दो वक़्त की रोटी मिले,
इसके सिवा कुछ चाह नहीं,
दौलत की चाहत नहीं,
मीरा को घनश्याम मिले,
नफरत की भाषा न जाने,
प्यार की दुनिया में,
नफरत को मिटाने आए,
कुछ न चाहूँ दुनिया वालों,
बस प्यार भरा पैगाम मिले,
छल की बात मैं क्या जानूँ,
मुझे कलम और दावात मिले,
तेरी चाहत तुझे मुबारक,
मुझे प्रभु चित्रगुप्त का वरदान मिले,
माता-पिता से बड़ा न कोई,
दिल में बसाए रखता हूं,
किसी को कुछ भी मिले,
मुझे भागवत कृपा और चारो धाम मिले.

भोला शरण प्रसाद
2173, एस गोल्फ शायर,
नोएडा-150,
जिला- गौतमबुद्धनगर
(यू.पी.) 201310

ग़ज़ल

मेरा मिटना ही मेरे दुश्मन का डर हो जायेगा
बीज मिट्टी में मिलेगा तो शजर हो जायेगा
पत्थरों को फेंकने का शौक मत पालो हुज़ूर
खून से लथपथ तुम्हारा भी ये सर हो जायेगा
लोग जो थे साथ सब रुखसत हुए ये बोलकर
छोड़िए ये तो बड़ा लंबा सफ़र हो जायेगा
चार दिन के बाद अक्सर भूल ही जाते हैं लोग
हादसा ये भी कोई बासी ख़बर हो जायेगा
घर से बुजुर्गों की तस्वीरें हटाकर देखना
अजनबी अपने लिए अपना ही घर हो जायेगा
पांव का कोई फफोला यूं ही रहने दीजिए
मंजिलों पर पहुंचकर यादे सफ़र हो जायेगा

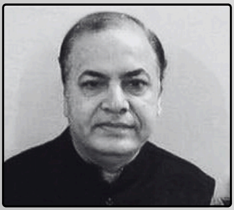

रवि ऋषि
दिल्ली

कहानी | पटाखे नहीं जलाऊंगा

दिवाली बस तीन दिन बाद आने वाली थी। घर की साफ सफाई पुरी हो चुकी थी। हेमंत और आनंद दोनों भाई आपस में बातें कर रहे थे इस साल जी भर के दिवाली मनाऊंगा,ढेर सारे पटाखे चरखी फुलझड़ी छोडूंगा और एटमबम भी खूब भड़काऊंगा।

अभी हेमंत और आनंद आपस में बातें ही कर रहे थे कि तभी उनके पिता वहां आकर पूछ पड़े क्या बात हो रही है तुम दोनों में?"

पापा हम इस साल खूब पटाखे छोड़ेगें बस हम पटाखों की बात कर रहे थे।

पाटाखा छोड़न की बात सुनकर हेमंत औतर आनंद के पापा बोल पड़े बेटा एक बात कहूं तुम बुरा तो नहीं न मानोगे?

"नहीं पापा हम आपकी बात को बुरा क्यों मानेंगे आप तो हमारे सबसे अच्छे पापा हैं। "

अगर तुम हमारी बात को बुरा नहीं मानोगे तो यह हमारे लिए खुशी की बात है। अच्छा हेमंत तुम बताओ तुम प्रकृत से कितना प्यार करते हो?"

बहुत ज्यादा।

हेमंत ने कहा।

अच्छा जब तुम प्रकृत से प्यार करते हो तो प्रकृत को साफ सुथरा भी रखना चाहते होगे!

"हां पापा हम चाहते हैं हमारा पर्यावरण प्रदूषण मुक्त हो।

बताओ इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?"

पर्यावरण को साफ सुथरा रखने के लिए पेड़ नहीं काटना चाहिए कार और मोटर गाड़ी से निकलने वाली धुंआं को कम करना चाहिए। प्लास्टिक मुक्त गांव और शहर बनाना चाहिए। और कल कारखानों से निकलने वाली जहरीली गैसों को कम करना चाहिए। पटाखे नहीं जलाना चाहिए।

तभी हम अपने पर्यावरण को बचा पाएंगे वर्ना हम प्रदूषण से कभी मुक्ति नहीं पाएंगे।

मेरे समझाने का यह मतलब है कि इस साल दिवाली पर पाटाखे छोड़न का जिद्द नहीं करोगे इससे हम पर्यावरण को साफ सुथरा रख पाएंगे। और शुध्द हवा जल ले पाएंगे। वर्ना हम सब पटाखे छोड़कर अपने पर्यावरण को और भी प्रदुषण भरा बना देंगे।

अब तुम दोनों बताओ दिवाली पर पटाखे छोड़ोगे या सिर्फ दीये जलाकर अपनी दिवाली मनाओगे।

पापा की बात सुनकर हेमंत और आनंद सोच में पड़ गए

हम पटाखे नहीं छोड़ेगें तो कालोनी के दूसरे बच्चे हमारी हंसी उड़ाएंगे हमें कंजूस कहेंगे। तभी आनंद बोल उठा हमें अपने पर्यावरण को बचाना है तो कुछ तो त्याग करना पड़ेगा।

तभी हेमंत कहने लगा पापा हम दिवाली पर पटाखे नहीं जालाएंगे ।हम खुद अपने पर्यावरण को बचाएंगे और दूसरे मित्रों को भी पटाखे न छोड़ने की सलाह दे कर उनको भी समझाएंगे। हेमंत और आनंद की बात सुनकर उसके पापा हेमंत और आनंद को बधाई देने लगे।

इस साल कॉलोनी के किसी बच्चे ने पटाखे नहीं छोड़े सबका एक ही संकल्प था हमें अपने पर्यावरण को बचाना है। अपने देश को पर्यावरण मुक्त बनाना है।

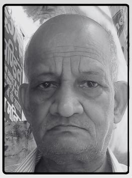

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
गल्ला मंडी गोलाबाजार 273408
गोरखपुर उ. प्र.

लघुलेख | उठता हुआ विश्वास

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली उस देश की रीढ होती है। शिक्षा से ही पीढ़ियां सवारी जा सकती हैं। शिक्षा एक ऐसा यंत्र है एक ऐसा मंत्र है जो सही दिशा में हो तो काफी तरक्की कर सकता है कोई देश और अगर विपरीत दिशा में हो तो कोई देश सदियों पीछे जा सकता है। यूं तो आए दिन भारत की शिक्षा जगत की खबरें आने का अनेक अखबारों और न्यूज़ चैनल में आती रहती हैं। लेकिन चिंता करने योग्य विषय है कि आजकल कुछ गिनी चुनी प्राइवेट संस्थाओं ने शिक्षा के स्तर पर मानो कलंक ही लगा दिया। आज भारत के हर कोने से प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक की घटनाएं सामने आ रही हैं। बहुत ही चिंता का विषय है की जो युवा दिन रात मेहनत करके अपने मां-बाप के सपने को और अपने सपने को साकार करने के लिए जीवन खपा देता है, जब वह परीक्षा में बैठता है और बाहर निकलने पर खबर मिलती है कि पेपर लीक हो गया है। तब उसके पास केवल दो ही रास्ते बचते हैं या तो वह किसी प्राइवेट संस्थानों में नौकरी करें या फिर ज्यादा डिप्रेशन में आकर कई बार युवा खुदकुशी भी कर लेते हैं। उच्च शिक्षा में तो मानो बुरा हाल है। पिछले दिनों कई प्राइवेट विश्वविद्यालय भी जांच के दायरे में आए थे। निजी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए अनेक अनेक लोक लुभावने स्कीम्स लॉन्च हो रहे हैं, जैसे स्कॉलरशिप,अनेक लुभावने विज्ञापन जिसे युवा भ्रमित हो रहा है। लेकिन इसमें बदलाव की आवश्यकता है। अगर निजी विश्वविद्यालय स्कीम से छोड़कर पढ़ाई की गुणवत्ता पर ध्यान दें तो एडमिशन के लिए यह सब करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। कई बार यह देखने में आता है की विश्वविद्यालय में जो चापलूस लोग होते हैं वह सालों नौकरी कर लेते हैं, लेकिन एक अच्छा टीचर जो बच्चों के भविष्य की चिंता करता है अपना कार्य ईमानदारी से करता है उसकी राजनीति का शिकार बना दिया जाता है। आजकल एक नया ट्रेंड देखने में आया है कि निजी विश्वविद्यालय एक नॉन अटेंडिंग नाम से कैटेगरी रखते हैं, जिसमें बच्चे बिना रेगुलर क्लास अटेंड किए केवल परीक्षा में बैठते हैं। और यह उच्च शिक्षा का स्तर गिरने के लिए सबसे बड़ा कारण है। आजकल यह देखने में आ रहा है चाहे वह उच्च शिक्षा की परीक्षा हो, चाहे प्रतियोगी परीक्षा हो, लोग सॉल्व कर बिठाकर नौकरी लगाने का जुगाड़ करते हैं। जिसको डमी कैंडिडेट कहते हैं। यह समाज में परोसा जाने वाला एक ऐसा षड्यंत्र है जिससे समाज और नौकरपेसा वर्ग को बहुत नुकसान है। कई बार बच्चों को ज्ञान बिल्कुल नहीं होता है जबकि उसने किसी परीक्षा में टॉप भी किया होता है। इसका अभिप्राय है कि जो व्यवस्थाएं हैं उन्हें सुधारने की महती आवश्यकता है। उच्च शिक्षा की तो मानो पल ही खुली पड़ी है। बेरोजगारी का भी सबसे बड़ा कारण यही लगता है। जब विद्यार्थी को मेहनत करने का समय होता है तब वह मेहनत नहीं करता है, बल्कि परीक्षा में बैठकर ही पास हो जाता है। और इसीलिए लाखों की संख्या में स्नातक और स्नातकोत्तर में युवा हर वर्ष पास हो रहे हैं। लेकिन जब किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठते हैं तो बाहर हो जाते हैं, जिससे बेरोजगारी की दर लगातार बढ़ रही है। हर व्यक्ति चारों तरफ यही कह रहा है कि साहब बहुत बेरोजगारी है। लेकिन सच तो यही है कि आज छात्र मेहनत करना ही नहीं चाहता है। देश के प्रबुद्ध जनों को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। हर व्यक्ति को सुधार की आवश्यकता है। जब हर नागरिक अपने कर्तव्य पूरे करने लग जाएगा, हर व्यक्ति यह सोचने लग जाएगा कि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। इस भावना से ही देश का विकास संभव है और उसकी शिक्षा प्रणाली भी सुरक्षित रहेगी।

जुगेन्द्र सिंह 'विद्यार्थी'
खुशीपुरा, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

लेख | शास्त्री जी

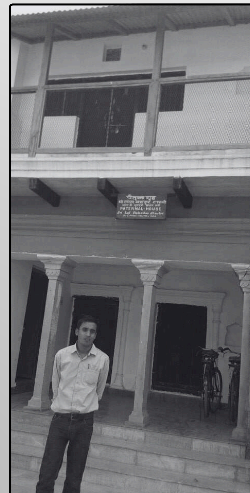

देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर को शारदा प्रसाद और रामदुलारी देवी के घर उत्तर प्रदेश में मुगलसराय शहर के पास रामनगर में हुआ था। नेहरू जी के निधन के बाद शास्त्री जी देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी के ईमानदारी और सादगी-पूर्ण जीवन के अनेक किस्से है -

पहला वाक़या जिक्र कर रहा हूं, जब शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री थे, एक बार उनके बेटे सुनील शास्त्री जी ने रात कही जाने हेतु सरकारी गाड़ी लेकर चले गए और जब वापस आए तो लाल बहादुर शास्त्री जी ने पूछा कहा गए थे, सरकारी गाड़ी लेकर इस पर सुनील जी कुछ कह पाते की इससे पहले लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि सरकारी गाड़ी देश के प्रधानमंत्री को मिली है ना की उसके बेटे को, आगे से कही जाना हो तो सरकारी गाड़ी का प्रयोग ना किया करो, शास्त्री जी यही नहीं रुके उन्होंने अपने ड्राइवर से पता करवाया की गाड़ी कितने किलोमीटर चली है और उसका पैसा सरकारी राज कोष में भी जमा करवाया।

हमारे देश में आजकल जन प्रतिनिधियों के परिजनों के साथ उनके करीबी लोग भी उन्ही के सरकारी गाड़ी में घूमते हैं अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिए।

दूसरा वाक़या जिक्र कर रहा हूं, लाला लाजपतराय ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे गरीब देशभक्तों के लिए सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी बनायीं थी जो गरीब देशभक्तों को पचास रुपये की आर्थिक मदद प्रदान करती थी, एक बार जेल से उन्होंने अपनी पत्नी ललिता जी को पत्र लिखकर पूछा कि क्या सोसाइटी की तरफ से जो 50 रुपये की आर्थिक मदद मिलती हैं उन्हें, जवाब में ललिता जी ने कहा हाँ जिसमे से 40 रुपये में घर का खर्च चल जाता है। शास्त्री जी ये पता चलते ही बिना किसी देर किये सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी को पत्र लिखा कि मेरे घर का खर्च 40 रुपये में हो जाता हैं, कृपया मुझे दी जानी वाली सहयोग 50 रुपये से घटा कर 40 रुपये कर दी जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा देशभक्तों को भी आर्थिक सहयोग मिल सकें।

आज का युग में तो यदि जन प्रतिनिधियों के सैलरी बढ़ोत्तरी की बात हो तो क्या सत्ता पक्ष, क्या विपक्ष दोनों एक मत हो इस मांग पर अपना समर्थन दे देते हैं, भले ही राष्ट्रहित और समाज हित के मुद्दों पर ये लड़ते देखे जाए। ये भी नहीं सोचते आज के वर्तमान जनप्रतिनिधि की वह तो सरकारी पैसे से मौज से जी रहे है और देश का किसान, मज़दूर इत्यादि गरीबी, महंगाई और अभाव की जिंदगी जी रहे हैं।

किस्सों के दौर में आगे चलते है तो एक किस्सा और जुड़ा है शास्त्री जी से, शास्त्री जी जब प्रधानमंत्री थे और उन्हें मीटिंग के लिए कही जाना था। जब वह कपड़े पहन रहे थे तो उनका कुर्ता फटा था जिसपर परिजनों ने कहा आप नया कपड़ा क्यों नहीं ले लेते हैं। इस पर पलट कर शास्त्री ने कहा की मेरे देश के अब भी लाखों लोगो के तन पर कपड़े नहीं है, फटा हुआ तो क्या हुआ इसके ऊपर कोट पहन लूंगा, और फटा कपड़ा इस तरह कुछ दिन और काम में आ जायेगा।

ऐसे थे हमारे शास्त्री जी, आज के जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों के सुट लाखों में आते हैं इन्हे इससे फर्क नहीं पड़ता की देश के लाखों लोगो की वार्षिक आय भी नहीं होगी लाखों रुपये।

कथनी और करनी में समानता रखते थे शास्त्री जी,

बात सन 1965 का जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुंच गयी थी। घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्ध विराम की अपील की उस समय हम अमेरिका की पीएल-480 स्कीम के तहत हासिल लाल गेहूं खाने को बाध्य थे हम भारतीय। अमेरिका के राष्ट्रपति ने शास्त्री जी को कहा कि अगर युद्ध नहीं रुका तो गेहूं का निर्यात बंद कर दिया जाएगा। उसके बाद अक्टूबर 1965 में दशहरे के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में शास्त्री जी ने देश की जनता को संबोधित किया। उन्होंने देशवासियों से एक दिन का उपवास रखने की अपील की और साथ में खुद भी एक दिन उपवास का पालन करने का प्रण लिया। देश के सीमा के रक्षक जवान और देश के अंदर अन्नदाता के लिए जय जवान, जय किसान का नारा दिया।

10 जनवरी 1966 में ताशकंद में भारत के प्रधानमंत्री शास्त्री जी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के बीच बातचीत करने का समय निर्धारित थी। लाल बहादुर शास्त्री और अयूब खान तय किये गये निर्धारित समय पर मिले। बातचीत काफी लंबी चली और दोनों देशों के बीच शांति समझौता भी हो गया। ऐसे में दोनों मुल्कों के शीर्ष नेताओं और प्रतिनिधिमंडल में शामिल अधिकारियों का खुश होना उचित था। लेकिन उस दिन की रात शास्त्री जी के लिए मौत बनकर आई। 10-11 जनवरी के रात में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई। ताशकंद समझौते के कुछ घंटों बाद ही भारत के लिए सब कुछ बदल गया। विदेशी धरती पर संदिग्ध परिस्थितियों में भारतीय प्रधानमंत्री की मौत से सन्नाटा छा गया। शास्त्री जी की मौत के बाद तमाम सवाल खड़े हुए, उनकी मौत के पीछे साजिश की बात भी कही जाती है, क्योंकि, शास्त्री जी की मौत के दो अहम गवाह उनके निजी चिकित्सक आर एन चुग और घरेलू सहायक राम नाथ की सड़क दुर्घटनाओं में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई तो यह रहस्य और गहरा हो गया।

देश के नागरिकों को चाहिए की शास्त्री जी के मौत की निष्पक्ष जांच की मांग करें सरकार से, यही शास्त्री जी के प्रति देश वासियों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र. -222129

लघुकथा | वह अकेली पहली रात

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जो अपने घर से दूर पहली बार पढ़ने के लिए हास्टल आयी है ।
आई आई टी में एडमिशन पाना कोई सरल बात नही है । मेहनत ही ऊँचाइयो को छूती है। पावनी ने रात दिन मेहनत करके आख़िर एडवान्स की परीक्षा पास ही कर ली | मम्मी पापा से कभी दूर न रहने वाली एक भोली भाली लड़की को अब दूर आई आई टी के गर्ल्स हास्टल में रहना था । संकोची होने के कारण छल प्रपच और चालाकी जैसे शब्दो से दूर रहने वाली पावनी को अब नए लोगों के बीच मे नया अहसास होने वाला था । तैयारियां की सामान को विधिवत पैक किया और निकल पड़ी नई यात्रा पर | यह यात्रा उसकी अकेली है । उसका अपना कैरियर है । कुछ कर दिखाने का समय है । पापा ने यह भी कह दिया कि न पढ़ने वाली बेटियों की सिर्फ शादी होती है । मेरी सोच अलग है । उनको ससुराल का ख्वाब न दिखाकर देश के लिए और अपने परिवार के लिए साक्षात ईश्वर ने वरदान दिया है जिसे नकारा नही जा सकता । क्या किसी एक अर्चना के आईने में सभी लड़कियों को देखा जाना चाहिए । नही कदापि नही ।
पावनी नर्वस थी उसे पहली बार घर से अलग रहना होगा । पहली रात हास्टल में नही रुकी । पापा क्या आपके साथ आज की रात होटल में ही रह जाऊ । मा राजी नही हो रही थी कि एक रात हास्टल मे ही रुको कल हमें भी इस बात की तसल्ली हो जाए सब ठीक है । फिर भी पावनी ने पापा को मना ही लिया । रात मे लेटी तो उसके हाथ पैरो में काफी दर्द था । मोबाइल दिखाते हुए बोली देखो आज हम बारह किलो मीटर चली हू पहली बार । उसके पैरों में दर्द था | चेहरा उतरा हुआ । आखिर दूसरे दिन मम्मी पापा को वापस जाना था तो कई बार वार्डन से पूछकर बाहर हाल चाल लेने आपी । वहाँ बहुतो के माता पिता गेटपर टकटकी लगाए देख रहे थे । कोई अपनी बेटी के लिए दुनिया भर सामान खरीद ला रहा था ऐसा लग रहा था कि उनको हास्टल में रखने को बजाय उनकी पूरी की पूरी गृहस्थी तैयार करायी जा रहा हो। कोई मां जाते वक्त अपनी बेटी की आँखे पोंछ रही थी तो कोई गले लगा रही थी । यह दृश्य मेरी आँखो में जब भी तैरता है सैलाब उठता है ।पावनी की मौ की आँखो में भी समन्दर की ऊँची लहरें भी जिनको दबाने की कोशिश हो रही थी लेकिन वो छलक ही गई । सामने नही पर बाद मे सही | ट्रेन में बैठने के बाद सब कुछ खाली था बस उनकी खुशियों का इन्तजार और ढेर सारे सपने कि वो अब कुछ बनकर आएगी । पावनी को अब उस चालाक दुनिया के साथ भी बहुत कुछ सीखना है । इस दुख की गहराइयों में भी खुशियों की चावी नजर आ रही थी इस उम्मीद के साथ कि पावनी भी आश्रित न होकर आश्रय बनेगी ।

डॉ० हरिवंश शर्मा
लखीमपुर खीरी

यात्रा वृतांत | 'दुर्ग' भ्रमण

यूं तो राजस्थान किलों के लिए प्रसिद्ध है । राजस्थान के हर बड़े शहर में एक किला (दुर्ग) आपको अवश्य दिख जाएगा। परंतु राजस्थान के चित्तौड़गढ़ का किला अपने आप में बेहद खास है। चित्तौड़गढ़ का किला भारत का सबसे विशाल दुर्ग है। चित्तौड़गढ़ मेवाड़ राज्य की राजधानी थी। किले की चारदीवारी भी अपने आप में बेहद खास है । यहां आने वाले पर्यटकों में राजस्थान के निवासियों के अलावा भारत के अलग-अलग राज्यों के निवासी भी आते हैं। इसके अलावा देश-विदेश के तमाम सैलानी रोजाना हजारों की तादात में यहां आते हैं। यह किला मौर्य राजवंश के सम्राट चित्रांगद मौर्य (चित्रांग) ने बनवाया था। यह एक विश्व विरासत स्थल है। मेवाड़ के प्राचीन सिक्कों पर एक तरफ चित्रकूट नाम अंकित मिलता है।

इस किले की बहुत प्रशंसा सुनने के बाद मेरा मन भी चित्तौड़गढ़ दुर्ग को देखने के लिए लालायित हो उठा था। बचपन में पुस्तकों में चित्तौड़गढ़ के किले का एक चित्र देखा था और कुछ कहानियां भी सुनी थी जो राजपूत राजा महाराणा प्रताप के बारे में थी। दरअसल जब मैं सन 2022 में मेवाड़ विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्य करने के लिए आया तो यह उत्सुकता और भी ज्यादा बढ़ गई थी। लेकिन शुरुआत में मेरे ज्यादा मित्र भी ना थे और विश्वविद्यालय में भी ढेर सारे कार्य के कारण मुझे जाने का अवसर न मिला। धीरे-धीरे समय व्यतीत होता चला गया लेकिन मन में एक ललक थी चित्तौड़गढ़ दुर्ग देखने की।

हुआ यूं कि मार्च 2023 में मैं बी ए की क्लास का कोऑर्डिनेटर बना और तभी मुझे बी ए के समस्त छात्रों के साथ फोर्ट विजिट करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। एक दिन अचानक हमारे संकाय अध्यक्ष डॉ सोनिया सिंगला जी ने मुझे बुलाया और कहा की सर आज 3:00 बजे बी ए के सभी बच्चों को चित्तौड़गढ़ किले का भ्रमण कराना है। मैडम जी ने विश्वविद्यालय की बस से जाने के लिए अनुमति ले ली थी। बहुत खुशी थी जिसे मैं बयां नहीं कर सकता क्योंकि कभी सोचा ही ना था कि मैं चित्तौड़गढ़ दुर्ग का भ्रमण कर पाऊंगा। सभी छात्र मस्ती के साथ विश्वविद्यालय की बस में बैठ गए। मैंने एक छात्र से सभी बच्चों की लिस्ट बनवा ली जिसमें मोबाइल नंबर भी अंकित थे। दरअसल मोबाइल नंबर इसलिए ले लिए थे कि कहीं कोई गुम हो गया तो फोन कर लेंगे।

30 मिनट में बस चित्तौड़गढ़ पहुंच गई और वहां से ऑटो लेकर हम लोग चित्तौड़गढ़ किले की ओर निकल पड़े। छात्राएं और छात्र दोनों ही थे तो थोड़ा सा सफर कठिन सा रहा क्योंकि मैं अध्यापक जो था। मुझे मस्ती करने से परहेज करना पड़ा। अपना कारवां अब चितौड़गढ़ फोर्ट पर पहुंच चुका था बच्चों ने अलग-अलग तरह की नक्काशीदार मंदिरों को भी देखा। सभी छात्रों ने वहां विजय स्तंभ, पद्मिनी महल, जौहर स्थल, काली माता का मंदिर, कीर्ति स्तंभ, नीलकंठ महादेव का मंदिर, महावीर स्वामी का मंदिर आदि का आनंद के साथ भ्रमण किया। मैं सभी छात्रों को वहां प्रत्येक स्थान के बारे में अलग-अलग विस्तार से बता रहा था। ज्यादातर जगहों पर तो शिलालेख लगे हुए थे जो पुरातत्व विभाग में लगवा रखे हैं।

इसके बाद सभी छात्रों ने चित्तौड़गढ़ में प्रसिद्ध नमकीन और खाने का कुछ सामान खरीदा। बाद में हम विश्वविद्यालय की बस से वापस विश्वविद्यालय आ गए। और सभी छात्रों ने आकर विश्वविद्यालय के नीलकंठ महादेव मंदिर में एक समूह छायाचित्र लिया और अपने-अपने घर चले गए।

लेकिन यह चित्तौड़गढ़ की यात्रा बहुत ही सुखद महसूस हुई और सभी के मस्तिष्क पर एक यादगार पल छोड़ कर गई।

जुगेन्द्र सिंह 'विद्यार्थी'
खुशीपुरा, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

कहानी | रॉकेट वाला

" कई दिनों से बीस रुपए ही मिल रहे हैं, सुबह शाम अखबार बेचकर। दीवाली पर पटाखे कैसे खरीदेंगे इस बार?" यही सोच सोचकर परेशान थी बच्चों की एक टोली। सब अपनी अपनी राय दे रहे थे लेकिन कोई उचित रास्ता नहीं दिख रहा था। कुछ बच्चों ने समस्या को ख़त्म करने के इरादे से कहा," दीवाली तो हिंदुओं का त्यौहार है। हम क्यों उसे मनाने के लिए इतने परेशान हो रहे हैं ? ईद पर ही पटाखे चलाएंगे तब तक और भी पैसे इकट्ठे हो जायेंगे" बात सही भी थी। वे सभी गरीब बच्चे मुस्लिम बस्ती में रहते थे। दूसरे बच्चों के जैसे उनके अच्छे घर नहीं थे। परिवार के सदस्य मजदूरी करके अपना पेट पालते थे। बच्चे भी छोटे मोटे काम करके थोड़े बहुत पैसे कमा लेते थे और अपने परिवार का खर्च चलाने में मदद करते थे। अब्दुल उनमें सबमें ज्यादा होशियार था। दिन में काम भी खूब करता था और शाम को स्कूल भी जाता था। सुबह सुबह जब सभी बच्चे सोए रहते अब्दुल जल्दी उठता और अब्बू की साइकिल पर चढ़कर अखबार बांटकर आता। रोज बीस रुपए कमा लेता लेकिन सभी रुपए अपने पिता को दे देता। घर में कई भाई बहन थे, घर खर्च में पिता को मदद मिल जाती। पटाखे खरीदने और उन्हें चलाने का उसे बड़ा शौंक था। जबसे पटाखों की दुकानें सजती, बाजारों में दीपोत्सव की रौनक बढ़ती वह सपने बुनने लगता। हर रोज़ ज्यादा मेहनत करता और पैसे बचाने की कोशिश करता जिससे पटाखे खरीद सके। पिछले हफ्ते बहन बीमार हो गई तो बचाए हुए पैसे मां के हाथ में रख दिए। इस हफ्ते सोमवार से ही कोशिश शुरू कर दी। जल्दी उठना और तय संख्या से अधिक घरों में अखबार वितरित करना। हर दिन पांच रुपए अतिरिक्त कमाए और गुल्लक में डालता रहा कि दीवाली से पहले दिन अपनी पसंद के पटाखे खरीद पर चलाऊंगा। पूरी टोली उत्साहित थी। गरीब दोस्त पैसे से तो मदद नहीं कर सकते थे लेकिन हौंसला खूब बढ़ाते रहे थे। उन्हे पता था कि चलाने लायक पटाखे नहीं खरीद पाएंगे लेकिन अपने दोस्त को चलाते हुए देखना भी उन्हें रोमांचित कर रहा था। उत्साह और उलझन हर एक के मन में था। उलझन पैसे इकट्ठे करने की और उत्साह उनसे खरीदे पटाखे चलाने का।

त्यौहारों पर कुछ लोग अपने लिए काम करने वाले लोगों को उपहारस्वरूप कुछ सामान या पैसे भी देते थे लेकिन वो सब त्यौहार के दिन ही मिलता था, उससे पहले नहीं। इसलिए उम्मीद तो थी परंतु खुद से मांगने को ईमान तैयार नहीं था। इसी उठा पटक में पूरा सप्ताह बीत गया और टोली के पास कुल मिलाकर तीस रुपए जमा हो गए। बड़ी शान से सब के सब दुकान पर पहुंच गए। " पटाखे खरीदने हैं।" समवेत स्वर में सबने कहा। दुकान वाले ने फुलझडियां और कुछ पटाखे सामने रख दिए। सबने एक दूसरे की ओर देखा।

" ऐसे छोटे मोटे पटाखे नहीं, रॉकेट चाहिए रॉकेट।" अब्दुल ने सबसे आगे बढ़कर कहा। " रॉकेट तो महंगा है, तुम नहीं खरीद पाओगे।" कहकर दुकान वाला दूसरे लोगों को सामान देने लगा। " मेरे पास भी पैसे हैं। पैसे देकर ही रॉकेट खरीदूंगा। बताओ तो कितने का है रॉकेट।" अब्दुल ने ऊंची आवाज़ में कहा। दुकान वाला पास में आकर बोला ," पचास रुपए का एक है। पैसे हैं तो लाओ और जितने चाहो ले जाओ।" अब्दुल का चेहरा उतर गया। तुरंत जवाब नहीं दे पाया। दुकान वाले को दूसरी ओर मुड़ते देखकर थोड़ी हिम्मत जुटाकर बोला ," तीस रुपए अभी दे सकता हूं। बाकी के दीवाली के तुरंत बाद देकर जाऊंगा।" दुकान वाला हंसकर बोला," मैंने तो पहले ही कहा था, तुम ही ज़िद पर अड़े थे। देखो भाई हमारा भी त्यौहार है, कुछ मुनाफा हमें भी कमाना है। और त्यौहार पर कोई उधारी नहीं चलती।" दुकान वाले की दो टूक बात सुनकर बच्चे दुकान से बाहर आ गए। सबके सब मायूस थे। दूसरे बच्चों को अपने माता पिता के साथ पटाखे खरीदते हुए देख रहे थे। अब्दुल कुछ सोच रहा था। बिना कुछ कहे फिर से दुकान पर चला गया। " देखो चाचा, रॉकेट नहीं दे सकते हो तो तीस रुपए के सस्ते पटाखे दे दो।" दुकान वाला फिर से हंस पड़ा ," तुम तो रॉकेट खरीदने आए थे फिर अब सस्ते पटाखे क्यों मांग रहे हो? मेरा इतना टाइम बरबाद कर दिया।" उसने इशारा किया और दुकान पर काम करने वाला एक छोटा बच्चा पटाखे का डब्बा उठा लाया। अब्दुल ने तीस रुपए देकर वो डब्बा खरीद लिया। बच्चे वापिस चल दिए। पटाखे मिलने की खुशी तो थी लेकिन रॉकेट नहीं खरीद पाने का मलाल भी था। " क्यों उदास हो तुम सब ? पटाखों के बारूद से मैं खुद एक रॉकेट बनाऊंगा। इस दीवाली पर रॉकेट ही चलाएंगे।"

बच्चों के चेहरे पर रौनक लौट आई। सबने एक दूसरे से हाथ मिलाया और मोहल्ले के बाहर बने चबूतरे पर आकर बैठ गए। सबने मिलकर पटाखे तोड़कर बारूद बाहर निकाल लिया। अब्दुल पिछले साल चलाया हुआ एक रॉकेट उठाकर लाया जिसे उसने संभालकर रखा था कि उसके जैसा नया खरीद लायेगा। सारा बारूद उसमें भर दिया। एक पतला कागज लपेटकर उसे चिपका दिया ताकि बारूद बाहर नहीं निकल पाए। दीवाली की जगमगाहट से शहर रोशन था। गली, मोहल्ले घर, दुकान और सड़कें रोशनी से नहाए हुए थे। शाम से ही पटाखों की आवाज़ आनी शुरू हो गई थी। बच्चे खुश होकर आकाश में ऊंचे उठते हुए धुंए को देख रहे थे। एक रॉकेट था जो उस दीवाली पर सबसे अधिक ऊंचाई तक उठा था और सबसे अधिक देर तक जिसका बारूद जला था वो अब्दुल का बनाया हुआ रॉकेट था जो उसने अपने दोस्तों की मदद से बनाकर उसी चबूतरे पर बैठकर चलाया था। उस दिन किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं गया लेकिन सालों बाद जब उसने मिसाइल बनाई तब पूरी दुनिया ने उसे देखा और भारत के महान वैज्ञानिक को सलाम किया। गरीब मुस्लिम बस्ती में रॉकेट बनाने वाला कोई और नहीं मिसाइल मैन डॉक्टर ए पी जे अब्दुल कलाम ही थे जिन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और वैज्ञानिक परीक्षणों से दुनिया भर में भारत का नाम रोशन किया। कठिन परिश्रम और खुद पर भरोसा रखने से असंभव भी संभव हो जाता है। धर्म कोई भी हो यदि वो मिसाइल बनाने की प्रेरणा देता है तो उससे बेहतर कौन सा धर्म है ? त्यौहार किसी का भी हो अगर वो जीवन को रोशन करता है तो हर रोज़ उसे मना लेना चाहिए।

अर्चना त्यागी
जन्म स्थान - मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
वर्तमान पता- 51, सरदार क्लब स्कीम, चंद्रा इंपीरियल के पीछे, जोधपुर राजस्थान।

लेख | हिंदी भाषा

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जहां भाषाएँ, संस्कृतियाँ, और धार्मिक विश्वास एक साथ मिलते हैं। भारतीय संस्कृति की जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं और इसमें साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, रीति-रिवाजों और परंपराओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इस सांस्कृतिक विविधता के बीच, हिंदी भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और पहचान का प्रतीक भी है। 14 सितंबर को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला 'हिंदी दिवस' इसी महत्व को रेखांकित करता है, जो हमें हमारी भाषा के महत्व और उसे संरक्षित करने की आवश्यकता की याद दिलाता है।। भारत, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और संस्कृतियाँ एक अद्वितीय रूप में एक साथ गुथी हुई हैं।

1. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास : हिंदी भाषा का इतिहास काफी पुराना है। हिंदी की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो प्राचीन भारत की धार्मिक और साहित्यिक भाषा रही है। हिन्दी भाषा का उद्भव संस्कृत, पालि और प्राकृत जैसी भाषाओं से हुआ है। प्राचीन काल में, संस्कृत भाषा का प्रयोग धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रों में किया जाता था। मध्यकाल में हिन्दी का विकास अपभ्रंश भाषाओं से हुआ और यह धीरे-धीरे आम जनता की भाषा बन गई। 12वीं शताब्दी के आसपास हिंदी ने एक स्पष्ट रूप धारण किया और 19वीं शताब्दी में आधुनिक हिंदी का उदय हुआ। इस दौरान हिंदी साहित्य, कविताओं और गद्य में कई रचनाएँ सामने आईं। तुलसीदास, सूरदास, कबीर, और मीराबाई जैसे कवियों ने हिंदी को अपनी कृतियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। इनके साहित्यिक कृतियों ने हिन्दी भाषा को जनमानस के हृदय में विशेष स्थान दिलाया।

2. भारतीय संस्कृति में हिंदी का स्थान : भारतीय संस्कृति में हिंदी का महत्व इस बात से स्पष्ट होता है कि यह देश के अधिकांश भागों में संवाद का माध्यम है। हिंदी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है और इसे आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। भारत में विविध संस्कृतियाँ हैं और प्रत्येक क्षेत्र की अपनी बोली और भाषा है। फिर भी, हिंदी उन सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिंदी भारत की एकता और अखंडता का प्रतीक है और यह देश की सांस्कृतिक धरोहर का संवाहक है। भारतीय संस्कृति की धरोहर के रूप में हिन्दी का महत्व अत्यधिक है। यह भाषा भारतीय जीवनशैली, धार्मिकता, परंपराओं, लोकगीतों और लोककथाओं को सजीव रखने का कार्य करती है।

3. हिंदी साहित्य और भारतीय समाज : हिंदी साहित्य का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव है। हिंदी के कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सुधारों की आवश्यकता को उठाया। भक्ति आंदोलन के दौरान संत कवियों ने हिंदी में अपनी काव्य रचनाएँ लिखी, जिससे समाज में धार्मिक और सामाजिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ। रामचरितमानस, सूरसागर, और कबीर के दोहे भारतीय समाज के मनोविज्ञान और चिंतन धारा को प्रभावित करते आए हैं। इसके अलावा, मुंशी प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, और निराला जैसे साहित्यकारों ने आधुनिक हिंदी साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। साहित्य और कला में भी हिन्दी का एक विशिष्ट स्थान है। हिन्दी साहित्य में विभिन्न युगों का योगदान महत्वपूर्ण है - आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक। हिन्दी साहित्य में भक्ति साहित्य, रीतिकालीन साहित्य और आधुनिक युग के साहित्य में देशभक्ति और समाज सुधार के भाव निहित हैं। महात्मा गांधी से लेकर प्रेमचंद तक, सभी प्रमुख लेखकों और विचारकों ने हिन्दी का प्रयोग समाज को जागरूक करने व स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान के लिए किया।

4. हिंदी और भारतीय सिनेमा : भारतीय सिनेमा, विशेष रूप से हिंदी सिनेमा या बॉलीवुड, भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख हिस्सा है। हिंदी फिल्मों के गीत, संवाद और कहानियाँ भारतीय समाज के हर वर्ग तक पहुँचती हैं और इसकी सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाती हैं। हिंदी सिनेमा के माध्यम से भारतीय मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाजों का प्रचार-प्रसार न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी हुआ है। हिंदी सिनेमा के गीत-संगीत और कथानक ने भारतीय समाज के विचारों और भावनाओं को बड़ी गहराई से प्रस्तुत किया है।

5. हिंदी भाषा का वैश्विक प्रभाव : हाल के वर्षों में हिंदी भाषा का प्रभाव न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी बढ़ा है। प्रवासी भारतीय समुदाय और विदेशी विद्वानों के बीच हिंदी का अध्ययन और प्रचार-प्रसार बढ़ा है। आज हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है और कई देशों में इसे पढ़ाया जाता है। इसके अलावा, हिंदी भाषा का उपयोग अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और मीडिया में भी बढ़ा है। इसके जरिए भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहर को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने में सक्षम हो रहा है।

6. हिंदी और भारतीय परंपराएँ : भारतीय परंपराएँ और रीति-रिवाज हिंदी भाषा में गहराई से बंधे हुए हैं। विवाह, जन्मोत्सव, त्यौहार और अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सवों के समय हिंदी का उपयोग अत्यधिक होता है। भारतीय समाज में रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों का पठन-पाठन हिंदी में किया जाता है। ये ग्रंथ भारतीय परंपराओं और संस्कारों का मूल आधार हैं और इनका हिंदी में अनुवाद इन्हें सामान्य जन तक पहुँचाने का माध्यम बना है।

7. हिंदी भाषा का तकनीकी और डिजिटल युग में विकास : आज के डिजिटल युग में हिंदी भाषा ने अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखा है। सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग, और ई-कॉमर्स जैसी नई तकनीकों ने हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गूगल, फेसबुक और यूट्यूब जैसी तकनीकी प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी में सामग्री उपलब्ध कराई है, जिससे भारत के लाखों लोग इससे लाभान्वित हो रहे हैं। इसके साथ ही हिंदी भाषा में ई-पत्रिकाओं, समाचार वेबसाइटों, और ऑनलाइन कोर्सों की संख्या में भी वृद्धि हुई है।

8. हिंदी दिवस और इसका महत्व : हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिन को भारतीय संविधान सभा ने 1949 में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी भाषा को बढ़ावा देना, इसे सीखने और समझने के लिए प्रेरित करना और लोगों को अपनी भाषा के प्रति गर्व महसूस कराना है। इस दिन हिंदी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम, सेमिनार और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया जाता है।

हालांकि, हिन्दी के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव ने कई युवाओं को हिन्दी से दूर कर दिया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के कारण भी हिन्दी को एक सामान्य भाषा के रूप में स्वीकार करना कभी-कभी कठिन हो जाता है। भविष्य में हिन्दी की संभावनाएँ अत्यधिक उज्ज्वल हैं। वैश्वीकरण के बावजूद, हिन्दी की लोकप्रियता में कमी नहीं आई है, बल्कि इसे तकनीकी माध्यमों से और भी अधिक व्यापक बनाया जा रहा है।

निष्कर्ष : हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय पहचान, परंपराओं, और मूल्यों का प्रतिबिंब है। हिंदी के माध्यम से भारतीय समाज ने अपने विचारों, भावनाओं, और सांस्कृतिक धरोहर को व्यक्त किया है। आज हिंदी का महत्व वैश्विक स्तर पर भी बढ़ रहा है और यह भारतीय संस्कृति को विश्व में प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। हिंदी दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि हमारी मातृभाषा का सम्मान और संरक्षण कितना आवश्यक है। भारतीय समाज को हिंदी भाषा को अपनाकर उसकी समृद्धि और विकास में योगदान देना चाहिए, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित और प्रासंगिक बनी रहे।

शशि धर कुमार
जन्म - कटिहार (बिहार)
वर्तमान पता- गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201009

कहानी | खुश रहने की ज़िद

अक्सर ज़िंदगी में ऐसा कुछ अचानक घटित हो जाता है जिसके बारे में हम कभी सोचते नहीं हैं। कई बार ऐसे मुश्किल समय में, किसी मोड़ पे, कोई ऐसा मिल जाता है जो हमें जीवन का ऐसा पाठ पढ़ा जाता है जिससे हमारे जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल जाती है। मृणालिनी के जीवन में भी कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने ज़िंदगी के प्रति उसका नजरिया ही बदलकर रख दिया.....!

मृणालिनी एक पढ़ी-लिखी और करियर-ओरिएंटेड महिला थी। एक प्रतिष्ठित कंपनी में एक उच्च पद पर कार्य करते हुए घर और परिवार की जिम्मेदारी उसने बखूबी उठा रखी थी लेकिन हाल ही में उसका जीवन एक कठिन दौर से गुजर रहा था। ऑफिस में बढ़ती जिम्मेदारियों और अचानक आई पारिवारिक समस्याओं ने उसकी मानसिक स्थिति को हिलाकर रख दिया था। असल में उसके पति अनुपम को एक बड़ा प्रोजेक्ट असाइनमेंट मिला था जिसके चलते उसे कुछ महीने बाद, एक साल के लिए ऑस्ट्रेलिया जाना था। वो चाहता था कि मृणालिनी जॉब से ब्रेक ले और फिर अपने तीन साल के बेटे यश को लेकर उसके साथ चले। मृणालिनी ब्रेक लेना नहीं चाहती थी, जब अनुपम ने अकेले ऑस्ट्रेलिया जाने की बात की तो उसे लगा कि यश की जिम्मेदारी उसे अकेले उठाना होगी। उसे लग रहा था कि सारे सेक्रिफाइज़ और कॉम्प्रोमाईस वो ही क्यों करे? बस यही बात उनके बीच अनबन की वजह बनी हुई थी। रोज-रोज होने वाली झिकझिक ने पति-पत्नी के रिश्ते पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिए थे। उसके चेहरे की रौनक गायब हो गई थी और आजकल उसका हर दिन तनाव, चिंता और थकावट में डूबा हुआ होता था। उसे अपना जीवन ही बेमानी लगने लगा था।

मृणालिनी के घर में काम करने वाली महिला, शांताबाई एक छोटे से गाँव से शहर आई थी और अपने बेरोजगार व शराबी पति, बूढ़ी बीमार सास और तीन बच्चों के साथ मुश्किल हालात में जीवन बिता रही थी। सुबह आठ बजे से शाम पाँच बजे तक वह पूरी ईमानदारी और लगन के साथ, बिना किसी खीज या चिड़चिड़ाहट के कॉलोनी के घरों में काम करती, उसके बाद घर पहुंचकर सास के ताने, पति के दुर्व्यवहार और बच्चियों की समस्याओं का सामना करती, लेकिन अगली सुबह फिर चेहरे पर मुस्कान लिए काम पर हाजिर हो जाती थी। जैसे बीती हुई रात के साथ उसके सभी दुःख, परेशानियाँ और समस्याएं भी बीत गईं हों और नए दिन के साथ नई शुरुआत हो रही हो। शांताबाई की ज़िंदगी में चल रही मुश्किलों से मृणालिनी नावाकिफ़ हो ऐसा नहीं था। वो अक्सर शांताबाई के हालात पर तरस खाती थी।

एक दिन, जब मृणालिनी का मानसिक तनाव चरम पर था, और वो बचैनी सी महसूस कर रही थी तभी शांताबाई उसके कमरे में चाय लेकर आई। मृणालिनी को उदास और परेशान देखकर कहने लगी – “दीदी क्या बात है? कुछ दिनों से आप परेशान नजर आ रही हो, ज्यादा बात भी नहीं करती हो? तबीयत तो ठीक है न आपकी?”

“नहीं शांताबाई, ऐसा कुछ नहीं है,” मृणालिनी ने चाय का कप पकड़ते हुए शांताबाई से कहा, “तुम सुनाओ, तुम्हारे घर पे सब ठीक-ठाक चल रहा है?”

शांताबाई ने हंसते हुए कहा, “ठीक-ठाक क्या होता है दीदी? ये तो हमारा मन है, उसे समझा लो तो सब ठीक है नहीं तो रोते रहो, जीवन तो फिर भी जीना ही पड़ता है। ये तो हमपर है कि हम उसे कैसा जीना चाहते हैं, रोते हुए या हँसते हुए।” इतना कहकर शांताबाई कमरे से निकलने ही वाली थी कि मृणालिनी ने उसे रोक लिया और बोली, “ क्यों, तुम्हारा पति अब तुम्हें तंग नहीं करता? और तुम्हारी सास वो अब चिड़चिड़ नहीं करती क्या?” शांताबाई ने एक लंबी सांस छोड़ते हुए कहा, “कुछ भी नहीं बदला है दीदी, सब जैसे थे वैसे ही हैं। बस मैं ही अलग ढंग से सोचने लगी हूँ। पहले सबसे तंग आकर मैं अपने आदमी को छोड़कर बच्चों के साथ अलग रहने का सोचने लगी थी, पर उतनी हिम्मत नहीं थी मुझमें। फिर मैंने सोचा मेरा आदमी बच्चों पर तो जान छिड़कता है, मेरी सास भी मेरे काम पर आने के बाद बच्चों को देखती है, मैं तो उनकी वजह से ही काम कर पा रही हूँ न? जब वो अपना स्वभाव नहीं बदल रहे तो मैं क्यों बदलूँ? मैंने तो सोच लिया कि बच्चों के लिए जीना है तो बस इसमें ही खुश रहना होगा। अभी परसों जब मैं काम से

लेट हो गई तो मेरा आदमी बस स्टॉप पे खड़ा मेरी रस्ता देख रहा था, मुझे बस से उतरते देख झट से निकल गया, उसने जताया नहीं पर मैं तो समझ गई। जो हमें मिल जाता है हम उसपर ध्यान नहीं देते जो नहीं मिलता है बस उसी के पीछे पड़े रहते हैं और परेशान होते रहते हैं। सबको सबकुछ तो नहीं मिलता न जीवन में? हमने परिवार क्यों बनाया है दीदी, मिलजुलकर साथ रहने के लिए न? हर आदमी की सोच और समझ अलग होती है, सब हमारे जैसे हो जाएँ ये तो नहीं हो सकता, ऐसी उम्मीद करना भी ठीक नहीं है। उनकी नजर से देखें तो हम गलत हैं। दीदी, हमारा वश अपने-आप पर है तो हम उसे ही सुधार सकते हैं, बस यही सोचकर अब अपना नजरिया बदल लिया है और खुश रहती हूँ।"

मृणालिनी आश्चर्य से शांताबाई को सुन रही थी और उसके साँवले लेकिन आत्मविश्वास से लबरेज चेहरे को देखते हुए, उसके जीवन के संघर्षों को समझने का प्रयास कर रही थी। शांताबाई उसे बता रही थी कि खुश रहने के प्रति उसका आग्रह कितना साफ और स्पष्ट है। उसने मृणालिनी से कहा, "दीदी, ज़िंदगी में बहुत सारी कठिनाइयां आती हैं, लेकिन हमें खुद को मजबूत बनाना होता है। हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। जीवन में आने वाला हर उतार-चढ़ाव एक तजुर्बा दे जाता है अगर उससे सबक ले लिया तो जीवन जीने में आसानी होती है। अब आपको ही देख लो, कितनी मेहनत करती हो आप, यश बाबा को भी संभालती हो और घर को भी, आपको भी तो मुश्किल होती होगी, लेकिन आप तो साहब से शिकायत नहीं करती हो, हैं न?"

ये कहते हुए शांताबाई तो कमरे से बाहर निकल गई लेकिन मृणालिनी पर जैसे घड़ों पानी फिर गया। अनपढ़ शांताबाई की बातों ने उसे अंदर तक हिलाकर रख दिया। उसे अपने दोहरे चरित्र पर शर्मिंदगी हो रही थी। उसने महसूस किया कि शांताबाई की कठिनाइयाँ भले ही अलग थीं, लेकिन उसकी सकारात्मकता, संघर्ष करने की तीव्र भावना और हर हाल में खुश रहने की जिद ने उसके जीवन को सही दिशा दे दी थी। उसने सोचा कि अगर शांताबाई इन विकट परिस्थितियों में भी आशावान रहकर खुश रह सकती है, तो वह अपने जीवन की उन समस्याओं से क्यों हार मान रही है जिन्हें उसकी नाजायज जिद ने स्वयं खड़ा किया है। कहाँ तो अभी पिछले महीने उसने दो-तीन दिन अनुपम से सिर्फ इसलिए बातचीत नहीं की थी कि अपने काम में मशरूफ़ियत के चलते वो मृणालिनी और यश दोनों की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था, कितने दिनों से वो कहीं बाहर घूमने जाने का प्लान बनाने को कह रही थी लेकिन अनुपम उसे टालता जा रहा था, लाइफ एकदम मोनोटोनस लगने लगी थी, और अब जब वो साथ चलने का कह रहा है तो उसका ईगो आड़े आ रहा है। मनुष्य सचमुच कितना विचित्र प्राणी है।

मृणालिनी ने अपनी सोच और दृष्टिकोण में बदलाव लाने और अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने का निर्णय लिया। उसने शांताबाई द्वारा अनजाने ही कही हुई बातों को अपने जीवन में उतारने का निश्चय किया। उसने अपने जीवन के छोटे-छोटे सुखों को पहचानने और छोटी-छोटी खुशियों को संजोने का निश्चय किया। वह जानती थी कि धीरे-धीरे ही सही उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन होने लगेगा। जो सिर्फ उसे ही नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार के लिए लाभदायक रहेगा।

उलझन के इस दौर में शांताबाई एक शिक्षक की तरह उसे जीवन का अनमोल पाठ पढ़ा गई थी। मृणालिनी का मन शांताबाई के प्रति कृतज्ञता से भर उठा, उसने सच्चे दिल से उसे शुक्रिया अदा किया। वो सोच रही थी कि सिर्फ दस मिनट में शांताबाई ने वो काम कर दिया जो शायद कोई बड़े से बड़ा फ़ॅमिली काऊंसलर भी नहीं कर पाता। मृणालिनी समझ चुकी थी कि सही सोच और प्रेरणा अपने भीतर से ही आती है और जीवन की समस्याओं का समाधान ढूंढने की शक्ति प्रदान करती है। ये ख्याल आते ही उसके चेहरे पर एक बेफिक्र मुस्कान बिखर गई। दिल और दिमाग पर छाये हुए तनाव और परेशानी के बादल छँट चुके थे और दिल का सुकून चेहरे की निखरी रंगत में नज़र आने लगा था उसने अब खुश रहने की जो ठानी थी।

प्राची तिवारी 'छबि'
भोपाल, मध्यप्रदेश

कहानी | बेटियों की मां

आज एक साथ अपने दोनों बेटे चिराग और दीपक का बड़े धूमधाम से बाजे-गाजे के संग, ब्याह कर शालिनी देवी फूले नहीं समा रही थी. उनकी दोनों बहुओं का पूरे रीति रिवाज के संग गृह-प्रवेश हुआ. गृह-प्रवेश के दिन घर के हर एक सदस्य ने दोनों बहुओं को अपने पलकों पर बिठा लिया और बिठाते भी क्यों ना? ये दोनों बहू ही तो थी जो अपने पूर्वजों को पानी देने वाली थी, उन्हें तारने वाली थी, घर आंगन में दिया जलाने वाली थी. घर का चिराग दे कर वंश को आगे बढ़ाने वाली थी.शालिनी देवी तो एक साथ दो बहू को अपने घर आंगन में पा कर खुशी से झूम उठी थी.

शालिनी देवी को शुरू से ही इस बात का गुमान था कि वह दो बेटों की मां है. उन्हें कभी किसी की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी, खास कर अपनी जेठानी सविता जी की तो बिल्कुल भी नहीं. असल में सविता जी तो स्वयं बेचारी व दुखियारी की श्रेणी में आती थी क्योंकि वह दो बेटियो की मां थी. वैसे भी यह मान्यता जग जाहिर है कि बेटियां पराया धन होती है. भला बेटियां भी कभी अपने मां-बाप या मायके के लिए कुछ कर सकती हैं ?, बेटियां ना तो कुल का नाम रौशन कर सकती है और ना ही बुढ़ापे में अपने माता-पिता का सहारा ही बन सकती है.

अपनी इसी सोच की वजह से शालिनी देवी बेटियों की मांओं से स्वयं को श्रेष्ठतर समझती थी व अपनी जेठानी सविता जी को बेबस व लाचार. इतना ही नहीं वे बात बात पर सविता जी को खरी खोटी सुनाने से भी नहीं चूकती थीं, दो-दो बेटी जनने का ताना देना और उन्हें अपमानित करना तो जैसे उन्होंने अपना अधिकार ही समझ लिया था. रिश्ते व उम्र दोनों में छोटी होने के बावजूद परिवार और समाज में शालिनी देवी का ओहदा अपनी जेठानी सविता जी से ऊपर था क्योंकि वह दो-दो बेटों की मां थी और सविता जी दो बेटियों की. शालिनी देवी इस बात से आश्वस्त थी की वह दो बेटों की मां है इसलिए उन्हें बुढ़ापे में कभी भी किसी की ओर मुंह ताकने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

दो बेटों की मां होने का गुरूर शालिनी देवी पर कुछ इस तरह से छाया हुआ था कि वह हमेशा शान व रूआब से भरी रहती और सविता जी परिवार वालों के समक्ष सदा झुकी हुई, मानो बेटियों को जन्म देकर उन्होंने कोई पाप कर दिया हो, वैसे तो सविता जी अपनी दोनों बेटियों से अत्यंत स्नेह रखती थी परंतु उन्हें भी इस बात का मलाल था कि उनका कोई बेटा नहीं है यदि होता तो उनका भी बुढ़ापा आराम से सुरक्षित व सुगम हो जाता क्योंकि सविता जी भी इस पूर्वाग्रह से ग्रसित थी कि बेटा ही बुढ़ापे का सहारा होता है, बेटियां आज नहीं तो कल ब्याह कर पराए घर चली ही जाएंगी.

दोनों बेटों का ब्याह कर शालिनी देवी को ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने गंगा नहा लिया हो, वे यह सोच कर निश्चिंत हो गई कि अब उनका बुढापा व परलोक दोनों सुधर गया क्योंकि उन्हें और उनके पित्रों को दिया दिखाने वाली बहुएं जो घर आ गई है. शालिनी देवी का घमंड चरम पर था और वह सर पर दो बेटों की मां व दो बहुओं की सासू मां होने का गौरवान्वित ताज पहने घूम रही थी और वक्त का पहिया भी अपनी रफ़्तार से घूम रहा था.

समय का काल चक्र कुछ इस तरह से करवट बदला कि दिन प्रतिदिन समय बीतने के साथ ही साथ शालिनी देवी का अंहकार भी क्षीण होने लगा. पति के अरिष्टी के उपरांत तो जैसे शालिनी देवी का पूरा अलंकार ही स्वाहा हो गया. दो बेटों और बहुओं के होते हुए भी शालिनी देवी अपने ही घर में एक ऐसे निर्जीव वस्तु में तब्दील हो गई जिसका स्थान घर का पिछला कोना या स्टोररूम होता है. परिवार के किसी भी सदस्य को अब शालिनी देवी से कोई मतलब ना था. दोनों बेटे प्रतिष्ठित पद पर थे किन्तु उन्हें अपनी मां से कोई सरोकार ना था. बहूएं घर आंगन में रोज दीपक जलाती लेकिन शालिनी देवी के जीवन में तमस गहराता जा रहा था.

इधर सविता जी का जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो चुका था, उनकी दोनों बेटियां अमृता व रौशनी अब प्रशासनिक अधिकारी बन चुकी थी. समाज में सविता जी की पूछ परख बढ़ गई थी. दोनों बेटियां ब्याह कर अवश्य अपने ससुराल चली गई थी परन्तु उन्होंने अपनी मां और मायके का साथ नहीं छोड़ा था. समय समय बराबर दोनों बेटियां अपनी मां के पास आती और सविता जी के स्वास्थ्य व जरूरतों का पूरा ख्याल रखती. अब सविता जी का चेहरा खुशी से दमकने लगा था, आंखों में चमक आ गई थी. अब उन्हें दो बेटियों को जन्म देने व कोई बेटा ना होने का लेशमात्र भी अफसोस ना था.

समय की दशा के संग शालिनी देवी का मन भी शनैः शनैः अपने बेटे व बहुओं के दुर्व्यवहार से क्षीण व आघात होने लगा. एक वक्त ऐसा भी आया जब शालिनी देवी की वेदना इतनी बढ़ गई कि उनका हृदय चित्कार उठा. बिगड़ते स्वास्थ्य की वजह से जब उनकी शारीरिक दुर्बलता बढ़ने लगी तब दोनों बेटे-बहूओं ने उन्हें अपने साथ व पास रखने से इंकार कर दिया और उन्हें वृद्धाश्रम पहुंचाने की योजना बनाने लगे. यह जान कर शालिनी देवी के हृदय से आह निकली और वह मन ही मन विलाप करती हुई ईश्वर से बोली -

"हे ईश्वर तुम ने मुझे दो बेटों के बजाय दो बेटियों की मां क्यों नहीं बनाया."

तभी आवाज आई काकी मां... ओह...काकी मां चिरपरिचित आवाज सुन शालिनी देवी भावुक हो उठी और बोली -

" कौन अमृता.... रौशनी...."

"हां काकी मां हम है" अमृता और रौशनी दोनों साथ में बोली

दोनों को अपने सामने खड़ा देख शालिनी देवी की आंखों से अश्रुधार बहने लगे जिसे दोनों बहनों ने पोंछते हुए कहा-

"काकी मां अब चलो यहां से, आपको और तिरस्कृत होने की जरूरत नहीं है .आप केवल दो बेटों की नहीं, दो बेटियों की भी मां है. अमृता और रौशनी से संबल, सम्मान व अपनत्व पा कर शालिनी देवी ने दोनों को गले से लगा लिया और फूट-फूटकर रो पड़ी. बहते आंसूओं की धार में बेटों की मां होने का अंहकार, अभिमान सब धुल गया. शालिनी देवी आज हृदय से दो बेटियों की मां बन कर स्वयं को सौभाग्यशाली समझ रही थी.

प्रेमलता यदु
बिलासपुर छत्तीसगढ़

लेख | भारतीय नारी

नारी ईश्वर की बनाई अद्भुत शक्ति है
समाज ,परिवार और देश को एकता के बंधन में बांधे रखती है"

नारी को भारतीय संस्कृति में देवी ,शक्ति का स्वरूप और समाज का अभिन्न हिस्सा माना गया है। इस परिवार का संजीवनी बूटी माना जाता है, जो समाज के निर्माण में सहायक होती है। वेदों और पुराणों में नारी को आदर्श माना गया है। वैदिक साहित्य में नारी को ज्ञान, कला और शक्ति का स्त्रोत कहा गया है।

"नारी के हर रूप की महिमा बड़ी अपार है
नारी के बिना सृष्टि नहीं, यही जगत का आधार है"

भारतवर्ष एक संपन्न परंपरा और
सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लेबरेज, दूरदर्शिता, जीवंत उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में---

"हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं बल्कि इस रोशनी की लौ भी हैं।

"प्राचीन काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्त्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण साबित किए हैं।

"नारी को अबला समझ, मत कर भारी भूल।
नारी इस संसार में, जीवन का है मूल।।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय नारियों का इतिहास बड़ा गौरवशाली रहा है। इतिहास गवाह है कि भारतीय नारियों ने ऋषिका ,वीरांगना और प्रशासासिका इन तीनों रूपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय नारी का समाज में उत्कृष्ट स्थान है। इनके गौरव, गरिमा और महिमा का अद्वितीय महत्व है।

नारी न केवल घर को संभालती है बल्कि समाज में इसका योगदान भी काबिले तारीफ है। नारी का गौरव-गरिमा उसके समर्पण और संघर्ष में है।

महिलाओं में शिक्षा और आत्म चेतना के प्रसार ने समय के साथ उनकी प्रगति को बढ़ावा दिया है। आज भी महिलाएं सशक्त हैं। साथ
ही महिलाएं हर क्षेत्र में उन्नति और सफलता प्राप्त कर रही हैं।

"तोड़ के बेड़ियां सदियों की
अब नारी ने रण संभाला है"

भारतीय नारी की पहचान केवल सुंदरता नहीं, अपितु उनके गुण ,सादगी
और विनयशीलता है। भारत देश ही ऐसा है, जहां नारियों में अलग-अलग
राज्यों में अलग-अलग परंपरा और संस्कृतियां विद्यमान हैं। हमें अपनी संस्कृति और परंपरा को बनाए रखना है। नई हमारे समाज तथा देश सभी के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, नारी के बिना जीवन का कल्पना नहीं किया जा सकता है, नई कभी पत्नी के रूप में, बेटी के रूप में, मां के रूप में, बहन के रूप में आदि कई रूपों में होती हैं जिनके हम सभी के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान और योगदान होता है।

नई ही शक्ति का प्रतीक है इसलिए जहां शक्ति का सम्मान होता है, वहीं भगवान होता है और जहां शक्ति का अपमान हो, वहां सर्वनाश सुनिश्चित है.. भारत हमारी मां है, हमारी जननी है, एक नारी शक्ति का प्रतीक है।

"कभी अपमान मत करना नारियों का
पुरुष जन्म लेकर तो इन्हीं के गोद में पलता है"

पहले के समय की तुलना में महिलाओं की स्थिति में लगातार बदलाव आया है। आज की महिलाओं की स्थिति में लगातार बदलाव आया है। आज की महिलाएं राजनीति, पद, सैन्य क्षेत्र, आर्थिक सेवा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में पूरी तरह से भाग लेती हैं। इसके अलावा इन्होंने खेलों में भी पूरा योगदान दिया है। इस प्रकार इन्होंने परिवार और समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है।

नारी का सम्मान सदा होना चाहिए। संस्कृत में एक श्लोक है --"यस्य पूज्यंते नारयस्तु तंत्र रमन्ते देवता:"
इसका अर्थ है जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

इस प्रकार ,भारतीय नारी का गौरव, गरिमा और महिमा समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके समर्पण, संघर्ष और सेवा भाव से ही समाज का विकास संभव है। इसलिए हमें नारी के सम्मान का पूर्ण रूप से समर्थन करना चाहिए।

" नारी ही सीता मैया
नारी ही राधा रानी
नारी ही रक्षा करने वाली
नारी ही मां दुर्गा औ भवानी "

डॉ मीना कुमारी परिहार 'मान्या'
पटना, बिहार

लेख | असमानताओं का लेखा जोखा

सामाजिक असमानता भी अभिशाप की तरह है क्योंकि इसे चुनौती या आन्दोलन के स्वरुप में अवलोकित ही नहीं किया गया इसलिए अधिक ही आज जटिलता और बाधक तत्व बरकरार हैं। अपने देश में आर्थिक असमानता सम्बन्धी आन्कडे डरावने हैं। गैर बराबरी के स्याह पहलुओं की सम्यक पडताल सालो पहले होनी चाहिए थी किन्तु हो नहीं पाई। एक सरकार द्वारा अन्य सरकार के सर ठीकरा फोडना या दोषारोपण करना सहज है जबकि जमीनी स्तर पर महत्वपूर्ण कारकों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक उपायों को अमली जामा पहनाना लाजिमी है।

काबिलेगौर बात है कि विकसित देशों में कोविड महामारी के बावजूद अर्थव्यवस्था बेहतर तरीकों से सम्भाली गई लेकिन भारत में ऐसा नहीं हो पाया। अनियंत्रित व्यवस्था देखने को मिली और सतह पर अराजकता उभरी। विशेषज्ञों ने छद्म आंकड़े पेश किए। 2025 तक पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के दावागीरो के बयानों पर बडी हंसी आई। डालर के मुकाबिल रुपये का अवमूल्यन और अधिसन्ख्य श्रमिकों की आय में इजाफा न हो पाना बड़ी असमानता का सूचक है।

अजब बात यह भी कि न तो जमीनी और न ही आसमानी उपायों को अहमियत दी गई। अमीर और गरीब समुदायों को सार्वजनिक स्तर पर दिखाने और सही आंकड़ों को सन्सद में पेश करने की आवश्यकता नहीं समझी गई इसलिए फलितार्थ पक्ष ही आज गौण हैं। विदेशों में असमानता को नुमायां करने के लिए ड्रोन इमेजिंग या कहिए आकाश से गरीबों और अमीरो का निरीक्षण किया जा चुका है और रिपोट्स भी इस तरह के पेश किए गए लेकिन भारत में समानता विषयक विशेषज्ञों,खोजी पत्रकारों और सही आर्थिक विशेषज्ञों ने ऐसी जानकारी ही नहीं दी ।

याद कीजिये, लाकडाउन के दौरान लाखों लोगों की नौकरियां चली गई और प्राइवेट सेक्टरों ने भी सहायता के नाम पर हाथ खड़े कर लिए थे और उस दौर में मोदी सरकार श्रमिकों के लिए रक्षक सिद्ध नहीं हो पाई।

आज भी खास बदलाव नहीं है। असमानता के भयावह दृश्य बहुत स्थानो पर देखने को मिल रहे हैं।

एक उदाहरण बोस्टन का है जहाँ हेलिकॉप्टर के जरिये फोटोग्राफी की गई। इसके बाद श्वेत परिवारों की औसत कुल सम्पत्ति 247500 डालर बताई गई जबकि गैर प्रवासी अश्वेत परिवारों की औसत कुल सम्पत्ति केवल आठ डालर थी। भारी असमानता को रेखान्कित किया गया। हवाई फोटोग्राफी से जुड़े जान मिलर ने बेहतर बात यह कही कि खोजी पत्रकारों को न्यूज रुम में गरीबों को लेकर विविधता लानी चाहिए। पुराने तौर तरीके अमल में नहीं लाए जाएं। यानी असमानता को नए तरीके से प्रदर्शित किया जाए। आर्थिक रूप से विपन्न परिवेश में दो पत्रकारों ने हारवर्ड यूनिवर्सिटी में द जर्नलिस्टस रिसार्स नामक टिप शीट तैयार की और बताया कि गरीबी का शिकार जैसी शब्दावली आज की तारीख़ में अपमानजनक है, सो हमें पुराने तरीकों से बचना चाहिए। वहाँ हवाई निरीक्षण को जरुरी माना गया लेकिन यदि अपने देश में इसकी पैरोकारी भी की जाए तो एक्सपर्ट सरकार विरोधी करार दे दिए जाएगें। बहुत तादाद में गरीबों की झुग्गी झोपड़ियां हैं तो राजनेताओं के दौरे के समय झोपडियों पर रंगीन कपड़े डाल दिए जाए तो बहुत अच्छा, गरीबी तो जाहिर नहीं होगी।

इस तरह के स्वांगों के साए में आंकड़ों और लोकलुभावनी शब्दो की खूब बाजीगरी हो रही है। अपने देश में हवाई फोटोग्राफी एक सपना है। वास्तविकता दबी छुपी रहे तो बढिया।

जान मिलर ने सिस्टल से मुम्बई और मैक्सिको सिटी से दो दर्जन शहरों की तसबीरें सरकार को पेश की थी। अमीर और गरीब समुदायों की रिपोर्ट और तसबीरे टाइम मैग्जिन में छपी थी। इस बात पर बल दिया गया कि असमानता को चुनौती देने वाली पत्रकारिता होती रहे। ड्रोन इमेजिंग के जरिये आप किसी को पहेली की तरह पेश कर सकते हैं।

भारत में बढती आबादी, ढेरों समस्याओं के चलते समानता के स्याह पहलू ही बार बार उभरते हैं। विभिन्न ऐसे कारकों जातिगत भेदभाव, हाशिये पर सालों से जमे साधनहीन कमजोर लोगों,आदिवासियों, दलितो और मुसलमानों को भूमि और दीगर सम्पत्ति से वंचित रखा गया है। 2022 में विश्व असमानता रिपोर्ट और आंकड़ों के आने के बाद थोडी चर्चा

जरूर हुई लेकिन फिर उदासीनता व्याप गई। अमीर लोगों के पास 2021 में कुल राष्ट्रीय आय का 22 फीसदी हिस्सा पाया गया जबकि शीर्ष 10 प्रतिशत भाग पर काबिज थे। देश की आधी आबादी 13.1 फीसदी कमाती है। अभाव और गरीबी में जीवनयापन की दशा पर विशद विमर्श को जरूरी माना गया।

सही से कहा जाए कि आर्थिक समानता हमारे सम्वैधानिक लोकतंत्र की समानता की अवधारणा को साकार करने का माध्यम है। मगर केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों ने बहुत बार समानता और बराबरी पर महज भाषण ही दिया, आवश्यक सन्साधन और नौकरियों की उपलब्धता सुनिश्चित ही नहीं की सकी। योजनाओं का अभाव है।

दरअसल, हाशिये पर धकेले गए समुदायों को एक समान अवसर और सन्तुलित प्रतिनिधित्व देने की जरूरत है। सत्ता स्वार्थ के लिए सरकार द्वारा मुफ्त अनाज दिया जाना समानता बोध और अधिकार के लिहाज से उचित नहीं है इसलिए आज भी इसकी आलोचना जागरूक लोग ही कर रहे हैं।

स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, उत्पादन, विकास और अनुसंधान क्षेत्रों में भारी निवेश हुआ नहीं है इसलिए काफी असमानता बनी हुई है। लाखों लोग सात,आठ हजार रुपये की नौकरी को विवश हैं। नौकरियों का भारी टोटा है। बेरोजगारों की लम्बी लाइन है।

हास्यास्पद स्थिति देखिए कि आर्थिक विशेषज्ञ ठकुरसुहाती बात करते हैं कि कम आय में जीवनयापन करने वाले बहुसंख्य लोगों की कमजोर दशा के लिए मुट्ठी भर अमीरों के पास एकत्रित सम्पत्ति जिम्मेदार नहीं हैं । बहुत से सरमाएदारों का जन कल्याणकारी योजनाओं और कार्यों से मतलब नहीं है।

गौरतलब है कि सावित्री बाई फुले विश्वविद्यालय पुणे, जे एन यू और इन्डियन इन्सटीटयूट आफ दलित स्टडीज द्वारा बीस राज्यों के ग्यारह लाख से भी अधिक परिवारों पर अध्ययन किया गया था। बताया गया कि 22.3 प्रतिशत उच्चतर जातियों के हिन्दुओं के पास देश की 41 फीसदी सम्पत्ति है जबकि 7.8 फीसदी अनुसूचित जन जाति की आबादी के पास 3.7 फीसदी सम्पत्ति है। गरीबों के आंकड़ों में उत्तर भारतीय राज्यों की हालत खराब है। साधनो की कमी, मजदूरी, छुआछूत और लैन्गिक भेदभाव भी हैं जिससे असमानता की खाइयों को पाटा नहीं जा सकता। सरकारी अस्पष्ट नीतियां, कानूनी प्रावधान का लागू न होना, सामाजिक जागरूकता अभियान की कमी, महिलाओं को सम्पत्ति और भूमि अधिकारों से वन्चित करना, सरकारी योजनाओं का जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन न होने सरीखी विडम्बनाए मौजूद हैं।

अध्ययन के मुताबिक शहरों और गावों को मिलाकर महिलाएं कुल पेड वर्क फोर्स का 18_19 प्रतिशत है। आदिवासी समुदायों पर औद्योगिक विकास का बुरा असर है और विस्थापन की मार झेलने को विवश है। विश्व असमानता नव उदारीकरण और वैश्वीकरण जैसी अवधारणाएं भारतीय सामाजिक ,आर्थिक व्यवस्था से जातीय और लैन्गिक गैर बराबरी को दूर करने में सहायक नहीं है। सालो बाद भी श्रमिकों की हालत और कार्य कुशलता में सुधार नहीं है, मेहनत का कम पैसा मिलता है। निजीकरण के भी खतरे हैं जिनसे श्रमिक शोषण बदस्तूर जारी है। निजी कम्पनियों और कारखानो आदि की मुनाफाखोरी से असमानता को बढ़ावा मिल रहा है। सरकारों की निजीकरण को अधिमान वाली नीति भी कम जिम्मेदार नहीं, श्रमिक वर्ग को स्किल डेवलपमेंट की प्रक्रिया के जरिये योग्य बनाने का उद्देश्य नहीं है इसलिए उनकी आय बढती नहीं है। राज्यों की इसमें बढिया भूमिका नहीं है। रोजगार सृजन की सकारात्मक प्रक्रियाओं को प्राथमिकता मिलना जरूरी है। पहले देश भर में ढाई हजार दक्षता केन्द्र खोले गए जो अधिकतर आज बन्द हैं। सेन्टर सन्चालकों का कहना है कि बड़े औद्योगिक घरानों को काम मिलता है, दक्षता केन्द्र को नहीं। कौशल विकास विषयक नीतियों में बार बार परिवर्तन भी हुए हैं और युवाओं का प्लेसमेंट भी प्रभावित हुआ। स्किल इन्डिया मिशन मोदी सरकार की बहुप्रचारित योजनाओं की तरह सरकारी विज्ञापनों में ही सफल है। बजट मिलता ही नहीं है। उल्लेखनीय है कि आक्सफेम ने 2019 में असमानता खत्म करने के लिए अनेक अहम सिफारिशें की। सरकारों को विभिन्न क्षेत्रों और आम सेवाओं की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा गया पर अनदेखी की गई। खास तौर पर सामाजिक सुरक्षा पेन्शन और जन कल्याणकारी नीतियों को प्राथमिकता नहीं मिली। महिलाओं को लाभ नहीं मिला। कर प्रणाली की समीक्षा पर सहमति नहीं बन सकी। वैश्विक स्तर पर नियम और संस्थाओं का गठन नहीं हो

पाया है। कारपोरेट और सुपर रिच लोगों द्वारा किए जाने वाले कर अपवन्चना की रोकथाम की जाए तो बेहतर। करारोपण गैर बराबरी को दूर करने में सहायक है। करो का बोझ आम आदमी पर न पड़े तो यह न्याय सन्गत है।
समानता, समाजवाद (असली और जमीनी) साम्यवाद आदि आज भी बहस मुबाहिसे में फंस कर कोई तसल्लीबख्श नतीजा ही नहीं दे रहा है। व्यवहारिक धरातल पर सामाजिक समानता को भी प्रश्रय नहीं मिला है। जानकारों की मानें तो सियासत को वोट बैंक से मतलब है, समाज और देश में बढती असमानताओं की खाइयों को पाटना न तो कभी लक्ष्य पहले रहा और न आज ही है, स्वेच्छाचारियों के बड़े दल और गिरोहों को अपना बैक बैलेन्स और वोट बैलेन्स बढाना होता है इसलिए बेमानी सी बात है कि सामाजिक चेतना, समानता और सामाजिक मूल्यों के निमित्त राजनेताओं से बड़ी उम्मीद की जाए। यूं कांग्रेस काल में मनरेगा योजना का क्रियान्वयन होना श्रमिक हितार्थ रहा लेकिन भाजपा क्षत्रपों ने नीति आयोग गठन के बाद मनरेगा पर प्रहार किया।
हास्यास्पद ये भी है कि योजना आयोग पहले देश की योजनाओं को अधिमान देता था, जमीनी विकास कार्य होता था लेकिन मोदी राज में योजनाओं का स्थान नीतियों ने ले लिया। नीतियों का ही बखान करते रहिए मोदी भक्तों की तरह। ऊपर जो मैंने मनरेगा और श्रमिक पक्ष के बाबत लिखा है, बाखूबी समझिए तो यह भी समानता का ही एक अन्श सरीखा है। मुफ्त राशनिंग व्यवस्था में श्रमिकों का श्रम नहीं, प्रत्युत सियासी न्यस्त स्वार्थ हैं जो जनता को वोट और प्रलोभन के स्वरुप में है, अपनी सत्ता बनाए रखने की शातिराना तिकड़में हैं।
महत्वपूर्ण बात है कि समानता के लिए अर्थव्यवस्था का सम्यक् नियोजन जरूरी है जबकि केन्द्रीय नियोजन तत्र बेलगाम और अनियंत्रित है, तो क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। कुशासन के चलते जिन बहुत समुदायों का हाशियाकरण हुआ है उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने की जरूरत है। ऐसा न होने से ही समाजवाद आज हाशिये पर भजन कीर्तन करता है। कतार के अन्तिम आदमी को लाभ पहुचाने की बड़ी बातें बेमानी लग रही हैं।
मैथ्यू आरनाल्ड के शब्दों के रूप में कहूँ तो लाभ उपार्जन की ही दुष्प्रवृत्ति है और अतिशय समानता मानवीयता की भावना और व्यक्ति के गौरव से मेल नहीं खाती। ऐसे भी समाजवादी चिन्तक हैं जो आथिर्क विषमताओं को दूर करने के पक्षधर हैं। यों ये मानते हैं कि श्रमिकों को उचित मूल्य मिलना चाहिए। मगर देश में आज भारी बेरोजगारी, बढती महंगाई और बेलगाम पूंजीपतियों की लाभ कमाने और काला धन जमा करने के चलते करोड़ों श्रमिकों को फकत रोटी के लायक ही पैसा मिलता है जबकि महंगे उत्पादों की बिक्री से पूजीपतियों को जितन लाभ मिलता है उसका दो फीसदी भी कल्याणकारी योजनाओं पर व्यय नही होता।तकनीकी उदयमियों को सैलरी अधिक लेकिन श्रमिकों को कम मिलती है, इसलिए भारी असमानता बनी हुई है । शासक भी सरमाएदारों पर दबाव नहीं डालता कि श्रमिकों के लिए कुछ बेहतर करो। बहरहाल, समानता के लिए बड़े ठोस निर्णय और प्रस्तावों की दरकार है। सरकारों की नीतियों में आवश्यक बदलाव हुए बिना यह बडा काम सम्भव नहीं है।

प्रमोद झा
काशीराम नगर, मुरादाबाद, यूपी
मोबाइल : 9897167686

संस्मरण | स्मृतियों के निशान-चिन्ह

रात का भोजन करने के पश्चात कुछ कर्मचारियों को विधानसभा क्षेत्र हवेली में चुनाव कराने भेज दिया था। साथ ही बाकी बचे कर्मचारियों को चुनाव करवाने के लिए उनके चुनाव क्षेत्र भी बता दिए गए थे। ऐसा सब कुछ देर रात गए सुरक्षा कारणों से किया गया था। गुरदासपुर और पठानकोट में कार्यरत कर्मचारियों को सुरनकोट और मेंढ़र विधानसभा क्षेत्रों में जाने का आदेश दिया गया था। ऐसा उन्हें सुरक्षा कारणों से प्रात : सूरज निकलने से पहले ही करना था। ये तीनों विधानसभा क्षेत्र जम्मू कश्मीर प्रान्त के सरहदी जिले पूँछ के अधीन आते है। आतंकबाद का बहुत ज़ोर होने कि वजह से सुरक्षा का ध्यान रखते हुए बहुत सतर्कता बरती जा रही थी। पाकिस्तान खामोश युद्ध लड़ रहा था। इन्हीं तीन पाकिस्तान की सरहद के साथ सटते क्षेत्रों में आतंकबादियों का बहुत ज़ोर था। यहां आतंकबादी दरिंदो ने अपने पांव दूर दूर तक पसार रखे थे। हम सभी पंजाब में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए यह सब नए क्षेत्र थे। हम में से बहुत कम लोग होंगे जो कभी इन क्षेत्रों में घूमने फिरने के उदेश्य से यहां आए होंगे। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इन क्षेत्रों के गावों और नगरों के नाम तक भी नहीं सुनें होंगे। दूसरे ऊँचे ऊँचे पहाड़, सुनसान रस्ते, जंगल आदि के बारे में सुन सुन कर चिंता की अतल गहराइयों में कुछ समय के लिए डूब से गए थे। बहुत से लोगों के चेहरों की खिलखिलाट कहीं गुम सी गई थी। वैसे तो पिछले कुछ दिनों से ही सभी के ह्रदयों में चिंता की अग्नि धधक रही थी। यह अग्नि अब पूरा महीना जब तक चुनाव शांतिपूर्ण संपन नहीं हो जाते तब तक धड़कती रहेगी। लेकिन कुछ के भीतर शराब की मस्ती अभी भी नाच रही थी। कुछ लोग तो खाना खाने से पहले ही सामने मार्किट की तरफ खुले ठेकों और ढ़ाबों की तरफ उल्लार हो कर उमड़ पड़े थे। लेकिन तभी एक बेहद दुःखद समाचार ने पूरे बैष्णव धाम को शोक में डाल दिया था। ह्रदय गति रुक जाने से होशियारपुर से किसी शिक्षक का निधन हो गया था। समाचार आग की तरह फैला था और सभी को हैरान कर गया था। सभी परेशान भी थे और आश्चर्यचकित भी। प्रबंधकों और सुरक्षा अधिकारियों ने इस समाचार को बड़ी कुशलता से छुपा लिया था। चर्चा थी कि वह अपनी बस से नीचे ही नहीं उतर पाया था। वास्तव में वह बस में ही खामोश हो गया था। उसने कुछ ज्यादा ही टेंशन ले ली होगी। लेकिन प्रबंधकों ने समाचार फैला दिया कि उसे ज़रा सी तकलीफ हुई थी और उसे शीघ्र अस्पताल ले जाया गया है और वह शीघ्र ही स्वस्थ हो कर लौट आए गा। देखते ही देखते उसे एंबूलैंस आ कर ले गई थी। लेकिन आधी रात को एक समाचार ने सभी के होश उड़ा दिए थे कि उस की ह्रदयगति रुकने से मृत्यु हो गई है। डाक्टरों के प्रयास सभी असफल रहे हैं। जिस शिक्षक की मृत्यु हुई उस की आयु लगभग 52 बर्ष थी। प्रबंधकों ने उस की आयु देखे बिना ही इधर चुनाब कराने भेज दिया था। सरकार की व्यवस्था शिक्षा को ऊँचा उठाने की बजाए उन्हें इधर उधर के चुनाबी और फालतू कामों में उलझा कर अपना उदेश्य पूरा करने की ही प्रमुख है। इससे शिक्षा का भला नहीं होगा। कैसी व्यवस्था है जो शिक्षक को पढ़ाने नहीं दे रही बल्कि अन्य कागजी कामों में उलझा कर उसकी उर्जा को गलत जगह पर लगा रही है। शिक्षा समाज की रीड की हड्डी की तरह है।अब पूरा महीना यह शिक्षक दुर्गम क्षेत्रों में जा कर चुनाब कराएं गे। इस में शिक्षक का कोई कसूर नहीं है। इतनी आयु के अधिकारी को वो भी शिक्षक को ऐसे दुर्गम क्षेत्र में चुनाब कराने भेजना नियमों को ताक पर रख कर उसकी जिंदगी के साथ खेलना ही तो था। वह शायद तनाव ना सहन कर सका था और प्रबंधकों और सरकार की क्रूरता का शिकार हो गया था। फिर भी उसने बता दिया कि शिक्षक होना अपने काम के प्रति समर्पित होने का नाम है। लोगों के माथे पर इल्म, देश प्रेम और मिले कार्य को पूरी लग्न, मिहनत और साहस से करने का नाम है। शिक्षक होना दूसरों के लिए प्रेऱणा स्रोत होना है और उदाहरण प्रस्तुत करना है। सुबह की चाय लोगों के हलक में उतर नहीं रही थी। तभी समाचार आया कि पठानकोट से कुछ बड़े उच्च अधिकारी चुपचाप आए और बड़ी गोपनीयता से उसे ले गए हैं और किसी को कानों कान भी खबर नहीं लगी है। सभी लोग चिंतित और उदास तो थे लेकिन अपनी ड्यूटी के प्रति जागरुक भी थे। वे अब कुछ भी कर पाने कि स्थिति में ना थे। लाउड स्पीकर बार बार अनाउसमेंट कर रहा था कि मेंढर और सूरनकोट चुनाब क्षेत्रों में चुनाव डियूटी के लिए तैनात चुनाव अधिकारी शीघ्र सड़क पर ख़डी

तैयार बसों में अपनी अपनी जगह पर जा कर बैठ जाएं। बसें बिल्कुल तैयार जाने के लिए ख़डी हैं। हम भी अपना अपना सामान उठा कर नीचे की तरफ उतर कर सड़क की तरफ चल पड़े थे कि कुछ लोग वहां सड़क पर खडे ज़ोर ज़ोर से नारे लगा रहे दिखाई दिए थे। वे पंजाब सरकार के प्रति अपना रोष व्यक्त कर रहे थे जिसने बिना सोचे समझे और विचार किए राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए अपने विभिन्न विभागों के कर्मचारियों को इस आतंकवादी प्रभावित क्षेत्रों में भेज दिया था। इन में कुछ लोग जम्मू कश्मीर के शिक्षा विभाग से एवं कुछ अन्य विभागों के भी थे। देखते ही देखते पंजाब सरकार मुर्दाबाद के नारों से पूरा आसमान गूंज उठा था। सड़क के बीचो बीच गोलाकार में कर्मचारियों का बड़ा सा हजूम इकठा हो गया था। तभी के कर्मचारी सड़क के बीचो बीच कुर्सी पर खड़ा हो कर कर लोगों को संबोधित करने लगा था ----' भाईयो! हम यहां राष्ट्र हित और देश सेवा को ह्रदय में वसा कर काम करने के लिए आए और मर मिटने के लिए आए हैं। अब ऐसा करना हमें शोभा नहीं देता है। सुरक्षा बलों के जवान, भारतीय सेना के जांबाज योद्धा, पंजाब पुलिस के ताकतबर कमांडोज, केंद्रीय राष्ट्रीय सुरक्षा बल के जवान, रेलवे पुलिस के सिपाही सभी देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने के लिए देश कि सरहदों पर और भीतर की सुरक्षा हेतु भर्ती होते हैं। राजनेताओं के अपराधों की क़ीमत उन्हें अपने प्राण दें कर चुकानी पड़ती है। इस बार के चुनावों को सही ढ़ँग तरीके से कराने और किसी प्रकार की हेराफेरी और गड़बड़ ना हो इसी लिए जम्मू कश्मीर सरकार ने और चुनाव आयोग ने पंजाब सरकार से अपने कर्मचारियों को भेजने की गज़ारिश की थी। उसी को सामने रख कर हम यहां आए है। यहां आने का हमारा कोई व्यक्तिगत लाभ उठाने का कारण नहीं था। पंजाब के कर्मचारियों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि वे सब से बड़े देश भक्त हैं। वे केवल सरहदों कि रखवाली नहीं करते बल्कि अपने विश्व के महान लोकतंत्र को कामयाबी से काम करने और सफल बनाने हेतु भी हमेशा आगे हो कर काम करते हैं। वे जम्मू कश्मीर के लोगों का साथ दे कर इन चुनावों को भलीभांती सम्पन्न करा कर पूरे विश्व के सामने एक उदाहरण पेश करना चाहते हैं कि उन से बड़ा देश भक्त इस दुनिया में और कोई नहीं है। हम बताएं गे कि हम इन राजनेताओं से किसी भी प्रकार से कम नहीं हैं। आप की बहादुरी का डंका तो पहले ही पूरे विश्व में बजता है। भाईयो, पंजाबी कहीं भी जाएं अपने काम और बहादुरी से छिपे नहीं रह सकते। हमेशा आगे हो कर पूरे आत्म विश्वास से काम करना इन की विशेषता रहती है। अब हमें भी बीती को विसार कर आगे की सुध लेनी चाहिए। ' उसकी बातें सुन कर मन में बार बार आ रहा था कि देश के गौरब में ही हमारा गौरब है। एक अजीब तरह की राष्ट्र भक्ति का जजबा भी ह्रदय में उछल कूद करने लगा था। देखते ही देखते लोग बसों की और बढ़ने लगे थे। अब सुरक्षा कर्मचारी भी अपनी छोटी छोटी गाड़ियों और जीपों में हथियारों से लैस हो कर आ पहुंचे थे। मेरे लिए हरबंस ने अपने साथ वाली सीट पहले ही सुरक्षित रख ली थी। इसलिए मैं बड़े इत्मीनान से आ कर बैठ गया था। सभी बसें इक्क्ठा जम्मू बैष्णव धाम से सुबह साढ़े सात बजे के करीब मेंढर और सूरनकोट के लिए रवाना होंगी। इस बसों के काफिले की सुरक्षा का उतरदायित्व केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल के हाथों में था। पंजाब पुलिस के जो इंस्पेक्टर और जांबाज़ सिपाही हमें यहां तक छोड़ने आए थे वे सभी अब लौट गए थे। वे सभी प्रात:व रेल गाड़ी के द्वारा वापिस पठानकोट अथवा अपने अपने कार्य स्थलों की और रवाना हो गए थे। उनकी जगह अब हमारी सुरक्षा की जिम्मेदारी अब केंद्रीय सुरक्षा बलों ने संभाल ली थी। केंद्रीय सुरक्षा बलों के नौजवान अपने अधिकारीयों के नेतृत्व में तीन मैटाडोरों में आए थे। हम सभी अलग से छह बसों में बैठे थे। हर तीसरी गाड़ी काफिले में सुरक्षा बलों की चलती थी। काफिले में सब से आगे सुरक्षा बलों की गाड़ी हथियारों से लैस और उस के पीछे एंबूलेंस चल रही थी। उनके आगे पीछे हमारी बसें चल रही थी। काफिला धीरे धीरे रेंगता हुआ पुलिस लाइन में तेल डलवाने के लिए पैट्रोल पंम्प पर आ कर रुक गया था। सभी गाड़ियां एक के बाद एक अपनी बारी से तेल डलबाती और फिर एक तरफ ख़डी हो जातीं। धूप अब तेज़ हो गईं थी। तेल डलबाते डलबाते आठ यहीं बज गए थे। जब सभी में तेल डाल दिया गया तब सभी धीरे धीरे फिर से आगे बढ़ने लगीं थी। अब तक सड़कों पर अन्य गाड़ियों की ट्रेफिक भी बढ़ने लगी थी। मेरे साथ ही सीट पर बैठे हरबंस लाल ने बात छेड़ी थी। वह मां धरती के संदर्भ में कहने लगा था --

'मां धरती के हमने कितने नाम घड़े हैं - कर्मभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि आदि। मातृभूमि हर एक को प्यारी होती है। आदमी यहां पैदा होता है वहीं मरना चाहता है। यहां से सब कुछ ग्रहण करता है वहां सब कुछ छोड़ कर भी चला

जाता है। यहां बचपन व्यतीत किया होता है, अपनी पूरी ज़िन्दगी इधर उधर गुज़ार कर वापिस वहीं आकर उस धरती की गोद में रहना चाहता है, मरना चाहता है। उसे बार बार उसे देखने कि इच्छा हमेशा ब्लवती रहती है। वह अपनी जन्मभूमि को कभी भूलता नहीं। उसके लिए लडता है,भिड़ता है और अंत में उस की खाक में मिल कर उसे अद्भुत सकूं मिलता है। संसार में कहीं भी चले जाओ लेकिन अपनी मातृभूमि को भूल कर कभी प्रसन्नता महसूस नहीं करता। मैंने बर्षो फौज में काम किया। देश के कोने कोने में जा कर रहा, घूमा फिरा, जगह जगह, घाट घाट का पानी पिया लेकिन जो सकून मुझे सेवानिवृत होने के बाद अपने गांव आ कर मिला वह कहीं नहीं मिला। देखो मातृभूमि की रक्षा हेतु हम और हमारे देश का हर शक्श अपनी अपनी समर्था अनुसार लगे हुए है। जो हमारी इस मातृभूमि का अपमान करेगा, इसे छीनने को आए गा हम उसे और उसके अहंकार को मिट्टी में मिला देंगे, उसे ध्वन्स कर देंगे चाहे प्राणों की आहुति ही क्यों ना देनी पड़े। पाकिस्तान हमारा ही भाई मुल्क है। कभी वह हमारा ही हिस्सा रहा है लेकिन इस पर शासन करने वाले कभी भी अच्छे नहीं रहे। वह हमेशा दूसरे मुलको के हाथों में खेलते रहे। उन्होंने कभी दोस्ती और भाइयों की तरह रहना नहीं सीखा। हमेशा हमारे सिर के मुकट जम्मू और कश्मीर पर आँखें गडाए हम से छीनने की फिराक में रहता है । तीन लड़ाईयां हार चुका है। हमारे भाईयो को भी समय समय पर उकसाता है और आतंकी बना कर बार बार भेजता है। उन्होंने भी सबक नहीं सीखा है बल्कि बात बात पर रोष प्रदर्शन, हड़तालें, साडफूँक करने को उतारू होने के लिए लोगों को उकसाते हैं। पाकिस्तान ने यहां ही बस नहीं की बल्कि बार बार सरहद पार से गोलाबारी करना, लोगों के घरों के ऊपर तोपों के गोले दागना और उन्हें धुंए में उड़ाना आदि से मुँह नही मोडा। स्वयं को कश्मीरीयों का राज़दार और हितैषी बताना और हिन्दोस्तान को तंग करने के लिए उकसाना उसका मुख्य उदेश्य रहा। इस तरह के व्यवहार को उसे हर हाल त्यागना ही होगा 'वह कह ही रहा था कि बसे छोटी सड़क से भागती हुई चिनाब दरिया से निकलने वाली और डुग्गर धरती को अपने पवित्र जल से सींचने वाली नहर के साथ साथ बनी कैनाल से आगे बढ़ने लगी थी। इस छोटी सी नहर की बदौलत ही जम्मू का डुग्गर क्षेत्र खूबसूरत हरा भरा है, खूबसूरत फुला फला है। धान और मक्की के लहलहाते खेत, भिन भिन प्रकार की सब्बिजियों की भरमार इस नहर के सहारे ही खेतों में लहरा रही हैं। जम्मू प्रदेश की समृद्धि और खुशहाली इसी नहर की बजह से है।

बसों का काफिला और सुरक्षा कर्मियों की गाड़ियां प्रसिद्ध नगर अखनूर के बाहर बाहर चनाब दरिया के ऊपर बने ऊँचे पुल

पर आ कर रुक गई थी। पुल पर बना रास्ता केवल एकतरफा है। एक समय पर एक तरफ से ही गाड़ियां जा सकती हैं। इस लिए कुछ देर यहां रकना पड़ा था। जब हमारी तरफ से रास्ता खुला तो काफिला आगे बढ़ने लगा था। पानी पुल के दूर नीचे बह रहा था। इतना नीचे कि मन देख कर विस्मत हुए बिना नहीं रह सका था। प्राचीन पुल बर्ष 1988 ईस्वी में आई भयंकर बाढ़ में आए पानी के ज़ोरदार वहाब में वह गया था। उस प्राचीन पुल के कुछ लोहावशेष दूर गहरे पानी में बह कर पुल से काफ़ी दूर चले गए थे। आज भी बस में बैठे हुए पुल का ऊपरी हिस्सा पानी में आधा डूबा हुआ दिखाई दे रहा था। मन हैरान है कि कितनी भयंकर बाढ़ आई होगी, कितना बड़ा और ऊँचा पानी का रेला आया होगा जो इतने ऊँचे पुल को अपने ज़ोरदार वेग से वहा ले गया होगा। आदमी कुदरत के इस प्रकोप के बारे में सोच कर और कल्पना कर हैरान होने से नहीं रह सकता। फिर कई बर्ष महीने नया पुल बनाने में लग गए थे। काफ़ी देर से सेना ने एक पुल का निर्माण कर रखा है जिस से सभी गाड़ियां धीरे धीरे गुज़रती हैं। चिनाब दरिया सिंध दरिया की सहायक नदी के रूप में माना जाता है। पंजाबी सभ्याचार में प्रेम मुहब्बत से भरी अनेक गाथाएं चिनाब दरिया से जुडी मिलती हैं। इन सभी प्रेम गाथायों का सृजन भी इस चिनाब दरिया के किनारों पर ही हुआ है। यह दरिया बारा लाचा दर्रे से चंद्रा और भागा नदियों के संगम (सुमेल)से तांगी के नज़दीक 4900 से.मीटर की ऊंचाई पर से बिकसित हुआ है। उतर पश्चिम दिशा में पीर पंजाल की पहाड़ियों के मध्य यह जेहलम दरिया से समानतर अपनी यात्रा बहते बहते ज़ारी रखता है। किश्तबाड के समीप तंग गहरी घाटी में ही दक्षिण दिशा की तरफ मुड कर बहना शुरू कर देता है। आखिर यहां आ कर अखनूर के पास पाकिस्तान में प्रवेश कर झंग मुगलाए के नज़दीक जेहलम दरिया में गिरता है। इस की लंबाई 1200 किलोमीटर और इस का जलग्रहण क्षेत्र 27000बर्ग किलोमीटर है। इस का पुराना नाम असकीनी है। पुल को पार करते हुए दूर दरिया में पानी तेजगति से बहता हुआ नज़र आया था। पुल को पार कर हम शीघ्र ही ऐतिहासिक

नगर अखनूर पहुंच गए थे। कहते हैं कि इस नगर पर यूनानी आक्रमणकारियों ने हमला किया था तो उस समय इस नगर में प्रजातंत्र का दीपक प्रज्जवलित था। यह नगर संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र होने के बाबजूद इस नगर को वो स्थान नहीं मिला जो इसे मिलना चाहिए था। कहने को तो इस नगर के नीचे मोहनजोदड़ो सभ्यता के अवशेष भी मिलते हैं। लेकिन किसी भी इतिहास की पुस्तक में इस का उल्लेख नहीं मिलता है और ना ही भिन्न सभ्यतायों की जानकारी मिलती है। स्वर्गीय जगदीश चन्द्र साढ़े ने एक रेडियो वार्ता में अखनूर को अक्षयनूर के नाम से परिचित करवाया था जो उनके अनुसार सिकंदर महान के किसी सेनापति के नाम से जुडा था। उनके अनुसार सिकंदर महान के आक्रमण के समय अखनूर एक प्रसिद्ध और समृद्ध नगर था और उन्होंने इसको पोरस के राज्य की राजधानी होने की संभावना भी व्यक्त की थी। पोरस का नाम मन में आते ही ध्यान आया कि देश भक्ति एक बड़ी कठिन तपस्या है। पंजाब की पांच नदियों की धरती ने कितने देश भक्त पैदा किए हैं। गिनती करते आप की कलम कि सियाई सूख जाए गी। क्या इस पांच पानियों की धरती और देश के सिवाय किसी ने इतने देशभक्त पैदा किए हैं। राजा पोरस से लेकर आज तक कहाँ हैं उसकी यादें, उनकी स्मृतियों के निशान चिन्ह? जब राजनीतिक लोगों को उनकी मन की इच्छायों के अनुसार गदिदयां / कुर्सियां मिल जाती हैं तो सब कुछ पीछे छूट जाता है। फिर देश भक्तों तक दृष्टि नहीं जाती है। आज इन गाड़ियों बसों में सवार हो कर काफिला आतंकबाद के इस दौर में अपनी अपनी जान तली पर रख कर चुनाब कराने जा रहा है। इस के इस लोकतंत्र की सुरक्षा और देश सेवा को भी चुनाब जीत जाने के बाद कोई नहीं पूछे गा। बस चुनाब होने तक, और चुनाब होने के पश्चात सब कुछ सभी भूल जाएं गे। ऐसा पहले भी होता रहा है, आगे भी होता रहे गा।

1820 ईस्वी के आस पास इस अखनूर नगर में वर्तमान जम्मू कश्मीर राज्य की नींव रखी गई थी। इस तेजगति से बहते चिनाब दरिया के किनारे एक पेड़ के नीचे महाराजा रणजीत सिँह ने अपने कर कमलों से महाराजा डोगरा गुलाब सिँह को राज़ तिलक देकर जम्मू के वाइस परबतीय राज्यों का राजा बनाया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अखनूर से लेकर पूँछ तक के क्षेत्र में भारी तबाही मची थी मगर यहां के जनमानस ने बड़े साहस और बहादुरी से बर्ष 1947,1965,1971 एवं 1999 के कारगिल युद्ध का संघर्ष में अपने हज़ारों सैनिकों की कुर्बानी दे कर के पाकिस्तानी आक्रमणों का मुकाबला किया था। हमारे बहादुर सैनिकों की लड़ाई की गाथा इस बात से ज़ाहिर होती है कि हिमालय की इन बर्फ़ीली चोटियों पर इस कारगिल की लड़ाई में हमारे चार वीर बहादुर सैनिकों कैप्टन विक्रम बत्तरा, लैफिटनैट मनोज पांडे, राइफलमैन संजय कुमार और ग्रेनेडियर यागेंद्र यादव को उन के अद्भुत साहस दिखाने के लिए सर्वोच्चय सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से हमारे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया था। इन्होंने अपनी शूरवीरता,पराक्रम, साहस और आत्मबल से अपने दुश्मनों को खदेड वापिस किया था। अब हमारा बसों का काफिला राजा पोरस की राजधानी अखनूर को पीछे छोड़ कर एक छोटी सी सपरीली सड़क पर रेंगने लगा था। सड़क के एक तरफ गगनचुनबी ऊँचे ऊँचे पहाड़ और दूसरी तरफ गहरी घाटी। बस में बैठे हुए नीचे देखते ही भय से पूरा शरीर कांप जाता था। साथ में यहां भी कुछ समतल जगह होती वहाँ दूर दूर तक मक्की और धान के छोटे छोटे सीढ़ी नुमा खेतों में फ़सलें लहरा रही थीं। मक्की की फ़सल ऊँची ऊँची और छलियों से लदी हुई थी। धान के पौधों में से मिनज़रे निकलने लगी थी। पौधे बहुत सुहावनी और शीतल हवा में झूमते हुए अत्यंत सुहावनेऔर मनमोहक लग लग रहे थे। इस समय जब पूरा देश सूखे से दुःख की चपेट में था उस समय इन खेतों में धान और मक्की की लहल्हाती फ़सलें देख कर मन भीतर तक गद गद हो गया था। सड़क के साथ सटते पहाड़ों पर बनी पक्की पलस्तर नुमा पत्थरीली दीवारों पर देश प्रेम सेओतप्रोत कर देने वाले देश भक्ति के नारों से लिखे भरे पड़े थे। लगता है हमारे फोजियों ने अथवा क्षेत्र में कार्यरत स्वयं सेवक संस्थायों में काम करने वाले देशभक्त लोगों ने इन्हें बड़ी कठिनाई और देश भक्ति के ज़ज़बात में आ कर इतनी ऊंचाई पर चढ़ कर लिखा होगा। यह चटाने तो पहाड़ों की चोट्टियों के साथ जा कर जुडी थी जिन पर चढ़ कर रंग रोगन से इतनी सुंदरता से लिखना एक अत्यंत जोखिम भरा काम रहा होगा। मैंने उन नारों को चलती बस में बैठे बैठे पढ़ कर अपनी रोजाना लिखने वाली डायरी में नोट कर लिया था। इन में से कुछ इस प्रकार हैं ---

मातृभूमि की यही पुकार, देश -द्रोहियों का करो संहार।'

देश की सुरक्षा सब की जिम्मेदारी, मातृभूमि है हम सब को प्यारी।'

हों किसी भी प्रान्त के बासी, सब से पहले हैं भारतबासी । '

देश प्रेम से ओत प्रोत नारों ने हम सभी को भीतर तक भाव बिभोर कर दिया था । तभी हम में से सत पाल ने भारत माता की जय के नारे को बस में खडे हो कर बुलंद आवाज में बोला था । उसके पीछे पीछे पूरी बस में बैठे साथियों ने 'भारत माता की जय ' बोलते हुए उतर भी दिया था । पूरी घाटी जैसे थरथरा उठी हो और लौट कर उतर दे रही हो 'भारत माता की जय ' । देश प्रेम की इस अद्भुत गूंज ने सभी को ह्रदयों से ज़ज़्बाती बना दिया था, देश प्रेम के रंग में रंग कर और मर मिटने के लिए पूरी तरह तैयार कर दिया था । बस का पूरा वातावरण देश प्रेम से भर गया था । भीतर चलती बस में बैठे साथियों ने अब देश प्रेम और भक्ति के गीतों को गुनगुनाना शरू कर दिया था । सत पाल ने अपनी मधुर और सुरीली आवाज में देश भक्ति का गीत गा कर ऐसा रंग जमाया कि सभी उसके पीछे गीत गुनगुनाने लग पड़े थे ।

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा ।

हम बुलबुलें हैं इस की यह गुलसितां हमारा ।'

सड़क पर कहीं कहीं हमारी सेनायों के सिपाही आपने पूरे हथियारों से लैस चुस्तदरुस्त दिखाई दे रहे थे । सुरक्षा के संदर्भ में किसी प्रकार की कोई डील नहीं थी । कहीं कहीं सड़क के साथ सटते मकानों के आस पास खडे और बतियाते लोग भी दिखाई दिए थे जो सभी अपने क्षेत्र डुग्गुर का पहरावा पहने हुए थे । कुछ लोग अपने सीढ़ीनुमा खेतों में भी काम करते दिखाई दे रहे थे । सड़क के किनारे कहीं कहीं भारतीय वीर सैनिकों के बलिदान स्वरुप बुत्त भी लगाए गए थे जो उनकी स्मृतियों औैर बलिदानों की याद को हमेशा हमेशा के लिए संजो कर रखे हुए हैं । थोड़ी दूर और आगे बड़े तो एक बड़ी सी पलस्तरनुमा चट्टान पर हिन्दू मुस्लिम एकता के संदर्भ में भी मोटे मोटे अक्षरों में नारे लिखे दिखाई दिए थे जिनमे से एक तो मुझे उसी समय भलीभांति कंठस्थ हो गया था क्योंकि हमारे साथियों ने इसे बार बार दोहराया भी था ---'क्या हिन्दू क्या मुसलमान ।

कुदरत के हैं सब इंसान । '

अभी हमें इस सीमांत क्षेत्र में देश प्रेम की अलख जगाने के लिए शाम तक राज़ोरी पहुंचना है । अभी रास्ता लंबा और मुश्किलों से भरा है । रास्ते में बसें एक जगह आ कर रुक गईं हैं । यहां कुछ चाय की दुकाने और एक दो भोजनालय भी दिख रहे हैं । बसें रुकी तो सभी ने थोड़ा सुख की सांस ली है । सभी झुंडो में चायपानी एवं नास्ता करने इधर उधर दुकानों में जा कर बैठ गए हैं ।

डॉ. लेखराज
255,शहीद भगत सिंह नगर,
सुजानपुर -145023

PRANTI INDIA
Bagaura, Bihar - 841404 (India)
Ph.: +91 9453535495
www.PrantiIndia.com info@prantiindia.com

Pranti India
9 789334 097054

रजिस्ट्रेशन: बी आर 35/0029626, प्रान्ति इंडिया के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा पुरानी बाजार, बगौरा (बिहार) 841404, भारत से मुद्रित एवं प्रकाशित
*इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के चयन एवं संपादन हेतु संपादन मंडल उत्तरदायी।